

सितम्बर २०१३

मूल्य: ₹ १०

दादावाणी



शादी की तो दो नंबर की फाइल आएगी न ?

फाइल का सम्भाव से निकाल करना, ताकि फाइल खड़ी न रहे। जब तक यह खाता पूरा न हो, तब तक बहीखाता पूरा नहीं होगा, तब तक पूर्णतः निपटारा नहीं होगा।

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : ८, अंक : ११

अखंड क्रमांक : ९५

सितम्बर २०१३

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ. : अडालज,
जि. : गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabagwan.org
www.dadabagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

फाइल नं. २ का समभाव से निकाल

संपादकीय

अक्रम विज्ञान द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त होने से निश्चय तो प्राप्त हो गया, लेकिन व्यवहार, जो कि निकाली है उसका निकाल करना बाकी रहा। मोक्ष में जाने से रोकता कौन है? तो वे हैं, ऋणानुबंध की फाइलों के क्लेम! वे क्लेम शेष ना रहें और फाइलों से मुक्त होने के लिए पूज्य दादाश्री ने उपाय दिया है कि 'फाइलों का समभाव से निकाल करो' यह पूरा जगत् कोई फाइल नहीं है। किन्तु पति-पत्नी, बच्चे, सगेसंबंधी वगैरह सब मिलाकर २००-५०० फाइलों की वजह से संसार में भटकना पड़ता है। इन ऋणानुबंध की फाइलों का निकाल हो गया, तो फिर हम मुक्त!

अब मुक्तदशा प्राप्त होने के बावजूद भी, मुक्तता या मुक्ति के आनंद का अनुभव क्यों नहीं होता? तो वह है, ये फाइलों के प्रति राग-द्वेष! उसमें भी फाइल नं-२ (पति और पत्नी), सबसे नजदीकी और सबसे चीकणी फाइल कहलाती है। उस चीकणी फाइल के साथ हर-रोज के व्यवहार में कषाय उत्पन्न न हो, प्रेमपूर्वक लेकिन नाटकीय व्यवहार हो और ऐसा व्यवहार संसार बंधन का कारण न बनकर संसार में से, फाइलों के मुक्त होने का कारण बना रहे, यही देखना है। और उसका उचित उपाय इतना ही है कि 'फाइलों का समभाव से निकाल करना।'

समभाव से निकाल यानी दादाश्री कहते हैं कि आपको तो फाइलों का समभाव से निकाल करने का निश्चय करना है। फिर समभाव से निकाल हुआ या नहीं हुआ, उस झंझट में नहीं पड़ना है। फाइल नं-२ को दुःख नहीं हो, उसके मन का समाधान हो, इस तरह (राग-द्वेष-कषाय रहित) व्यवहार करने का प्रयत्न करना। फिर यदि आपका समभाव से निकाल करने का निश्चय है, तो कभी न कभी निकाल हुए बगैर रहेगा नहीं।

यहाँ पर दादाश्री सूचित करते हैं कि जब साँप नजदीक हो, तब हम कैसे सावधान हो जाते हैं! जागृत रहते हैं! वैसे ही समभाव से निकाल करने के व्यवहार में निश्चित नहीं हो जाना है। गाढ़ ऋणानुबंधवाले संबंधों में जागृति की बहुत जरूरत है। राग-द्वेष, अपेक्षा रहित और सामनेवाले को दुःख न हो इस तरह से व्यवहार करना हमारा फर्ज बन जाता है। जागृतिपूर्वक व्यवहार करने के बावजूद भी सामनेवाले को समाधान न हो, दुःख हो जाए, वहाँ प्रतिक्रमण के उपाय से वापस आने का मार्ग अपनाना है।

समभाव से निकाल का विज्ञान समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि यहाँ अपना दृढ़ निश्चय है इसलिए उसके पीछे द्वेष नहीं रहता है। हम समर्थन नहीं देते, उसका रक्षण नहीं करते, इसलिए फिर वह द्वेष खत्म हो जाएगा..वह जैसे-जैसे खत्म होता जाएगा, वैसे-वैसे समभाव से निकाल होता जाएगा। इसलिए यदि अपना मोक्ष में जाने का निश्चय है, तो फिर समभाव से निकाल का विज्ञान समझकर उस अनुसार जीवन में सिद्धांत अपनाना होगा तभी निकाल हो जाएगा।

प्रस्तुत संकल फाइल नं-२ के साथ समभाव से निकाल की सटीक समझ, देता है। जिसके आधार से विवाहितों को, फाइल नं-२ का समभाव से निकाल करके अनुभव की श्रेणी चढ़ने में मदद होगी।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

फाइल नं. २ का समभाव से निकाल

टेढ़ा बोल्ट, तो टेढ़ा नट

प्रश्नकर्ता : मैं ‘वाइफ’ के साथ बहुत ‘एडजस्ट’ करने की कोशिश करता हूँ किन्तु कर नहीं पाता।

दादाश्री : सबकुछ हिसाब से हैं टेढ़ा बोल्ट तो टेढ़ा नट, वहाँ पर नट को सीधा घुमाएँगे तो किस तरह चलेगा? आपको ऐसा लगता है कि यह स्त्री जाति ऐसी क्यों है? किन्तु स्त्री जाति तो आपकी ‘काउन्टर वेट’ है। जितना आप में दोष रहेगा, उतनी वह टेढ़ी। इसीलिए तो हमने ऐसा कहा है न कि सब ‘व्यवस्थित’ है।

प्रश्नकर्ता : यह जो टकराव होता है, वह ‘व्यवस्थित’ के आधार पर ही होता होगा न?

दादाश्री : हाँ, टकराव होता है वह ‘व्यवस्थित’ के आधार पर होता है, सही है, किन्तु ऐसा कब कहलाएगा? टकराव हो जाने के बाद। ‘हमें टकराव नहीं करना है’, आपका ऐसा निश्चय होना चाहिए। सामने खंभा दिखाई दे तो हम समझ जाते हैं कि खंभा आ रहा है, घूमकर जाना पड़ेगा, टकराना तो नहीं है। लेकिन इसके बावजूद भी टकराव हो जाए, तो हमें कहना चाहिए कि, ‘व्यवस्थित है’। यदि पहले से ही ‘व्यवस्थित है’ मानकर चलेंगे, तब तो ‘व्यवस्थित’ का दुरुपयोग हुआ कहलाएगा।

अपमान से विलय हो अहंकार

प्रश्नकर्ता : टकराव टालने की, समभाव से

निकाल (निपटारा) करने की हमारी वृत्ति हो, फिर भी सामनेवाला व्यक्ति हमें परेशान करे, अपमान करे, तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : कुछ नहीं। ‘वह अपना हिसाब है, तो हमें उसका ‘समभाव से निकाल करना है’ ऐसा निश्चित रखना। हमें अपने नियम में ही रहना चाहिए और हमें अपने आप अपनी पज़ल सोल्व करते रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला व्यक्ति अपना अपमान करे और हमें अपमान लगे, तो उसका कारण क्या अपना अहंकार है?

दादाश्री : सच में तो सामनेवाला जब अपमान करता है, तब वह अपने अहंकार को विलय कर देता है, और वह भी ड्रामेटिक (नाटकीय) अहंकार। जितना एक्सेस (अतिरिक्त) अहंकार है वही विलय होता है, उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है?

घर में मतभेद कम हो जाएँ, झंझट कम हो जाए, आसपासवालों का प्रेम बढ़े तो समझना कि बात समझ में आ गई, वर्ना बात समझ में आई ही नहीं है।

भेद होता है भेदबुद्धि से

दादाश्री : इस प्रकार वाइफ से भेद कौन करवाता है?

प्रश्नकर्ता : कौन करवाता है, दादा?

दादाश्री : बुद्धि ही। भेदबुद्धि से लोगों को जुदा लगता है, वर्ना सब है एक ही। मनुष्य में भेदबुद्धि होती है न! वाइफ के साथ तो भेदबुद्धि नहीं होती न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वही हो जाती है।

दादाश्री : पत्नी और उसका पति दोनों जब पड़ोसी के साथ झगड़ा करते हैं, तब कैसे अभेद होकर झगड़ते हैं? दोनों ऐसे-ऐसे हाथ करके 'तुम ऐसे और तुम वैसे'। दोनों ऐसे-ऐसे हाथ हिलाते हैं, तब हम समझते हैं कि "ओहोहो! इन दोनों में इतनी एकता! यह 'कोर्पोरेशन' अभेद है," हमें ऐसा लगता है। और फिर घर में जाकर दोनों झगड़ेंगे, तब क्या कहेंगे? घर में वे दोनों झगड़ते हैं या नहीं? कभी तो झगड़ते हैं न? वह कॉर्पोरेशन जब अंदर-अंदर झगड़े न, 'तू ऐसी और आप वैसे, तू ऐसी और आप वैसे...' फिर जब घर में जोरदार हो न! तब तो कहे, 'तू चली जा, यहाँ से घर (मायके) चली जा। मुझे चाहिए ही नहीं', कहेंगे! अब क्या यह नासमझी नहीं है? आपको क्या लगता है? वे जो अभेद थे, वे टूट गए और भेद उत्पन्न हो गया। अर्थात् वाइफ के साथ भी 'तू तू, मैं मैं' हो जाती है। 'तू ऐसी है और तू वैसी है!' तब वह कहेगी, 'आप कहाँ सीधे हो?' अर्थात् घर में भी 'मैं' और 'तू' हो जाता है।

'मैं और तू, मैं और तू, मैं और तू', जो पहले हम थे, हम दोनों एक हैं, हम ऐसे हैं, हम वैसे हैं। हमारा ही है यह। उसका 'मैं और तू' हो गया! अब, मैं और तू हो गया यानी खींचातानी हो गई। वह खींचातानी फिर कहाँ पहुँचेगी? ठेठ हल्दीघाटी की लड़ाई शुरू हो जाती है। संसार में कैसे खड़े रह सकते हैं, ऐसे फँसावाले संसार में, मैं और तू हो, वहाँ पर जीए ही कैसे? सर्व विनाश को निमंत्रित करने का साधन, वह है प्रतिद्वंद्वता!

संसार यानी किचकिच का कारखाना। संसार यानी टकराव। टकराव का समभाव से निकाल करना।

ममता से खड़ा है टकराव

प्रश्नकर्ता : पुरुष का जो अहम् है, वह स्त्री के साथ टकराव का कारण होता है, इसलिए स्त्री उसे बारबार कहती है कि 'यह तेरा अहम् है, तेरा अहम् है।' अब यह अहम् था इसीलिए तो पुरुष बना। अब टकराव न हो, उसके लिए क्या निराकरण है?

दादाश्री : ममता को लेकर टकराव होता है।

प्रश्नकर्ता : अहम् को लेकर नहीं?

दादाश्री : वह ममता अहम् के कारण ही है न! किन्तु यदि ऐसी ममता नहीं हो तो टकराव खत्म हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह जो ममता है उसी कारण टकराव होता है, तो फिर यह ममत्व में से बाहर कैसे निकलें?

दादाश्री : निकल ही गए हो न ममता में से! ममता अब रही कहाँ? जहाँ आप शरीर को ही अपना नहीं मानते, वहाँ? ममता तो आपने सोंप दी दादा को।

अब आपको ज्ञान प्राप्ति के बाद अहंकार-ममता का त्याग हो गया और आत्मा ग्रहण हो गया। आत्मा का लक्ष्य बैठ गया, वह कभी भी जाएगा नहीं।

अब सबसे पहले तो घरमें क्लेश-कलह वगैरह कुछ भी नहीं रहना चाहिए। क्योंकि आप शुद्धात्मा हो गए और चंदूभाई अलग हैं। आत्मा, इस जीवन में आत्मा जागृत हो गया, इतना ही चाहिए हमें। तेरा जागृत हो गया है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह ठीक है। वैसे तो पता है कि 'यह मेरा नहीं है,' फिर भी टकराव रहता है न? अहम् या ममत्व, किसी भी कारण से हर रोज के व्यवहार में टकराव रहता है न?

दादाश्री : टकराव तो यह बताता है कि यह आपका अहम् है। तब हमें भी अपने आप से कहना चाहिए कि चंदूभाई, 'यह अहम् ही है न आपका। क्या हम नहीं जानते?'

कच्चा काटोगे, तो फिर से उबालना पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : हज़बेन्ड-वाइफ में दस बार हज़बेन्ड खुद का कोई डिसिज़न ले, दस बार उसका करेक्ट (सच्चा) रहे, तब तो वह स्त्री (पत्नी) उसकी प्रशंसा नहीं करती या कुछ नहीं बोलती। उसके किए हुए कोई दस काम करेक्ट निकलें, फिर भी उसकी वाइफ का कुछ रिस्पोन्स (प्रतिभाव) नहीं रहता। किन्तु, यदि ग्यारहवाँ काम उससे बिगाड़ गया तो वह एकदम से आक्रमण करती है कि 'आप बेवकूफ हो, आप ऐसे हो, आपने ऐसा कैसे बिगाड़ा', कहती है, ऐसा सब होता रहता है।

दादाश्री : ऐसा होता रहे तो आपको क्या करना है उसमें? आपको पता चले न कि ऐसा सब किया है, तो आपको भी भीतर खुद अपने आप से कहना है कि 'चंदूभाई, आपने ऐसा क्यों कर दिया कि किसी को कहना पड़े? आप ऐसा क्यों करते हो?' पत्नी का समभाव से निकाल तो करना ही पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : आपको पता चला न कि ऐसी है। यदि वैसी नहीं है तो कहना कि 'भाई, वैसी नहीं है, आप जैसा मानते हो वह वैसी नहीं है।' तब कहेगा 'समझाइए।' फिर कहना, 'यह बात है,' तो वह भी समझ जाएगा। आप (शुद्धात्मा) थर्ड पुरुष की जगह पर हैं। थर्ड पुरुष को बगैर काम के फर्स्ट पुरुष (चंदूभाई) होने की कोई आवश्यकता है? आपको बचाव नहीं करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : नहीं, बचाव नहीं है यह।

दादाश्री : कच्चा काटोगे तो बार-बार उगेगा। कच्चा काटोगे तो फिर से उबालना पड़ेगा और एक बार दाल कच्ची उतार ली और फिर से उबालने को रखा तो समय लगेगा। अरे, पकने दो न आराम से पूरा का पूरा। वर्ना सख्त हो जाएगी।

घर में झंझट किस कारण से?

प्रश्नकर्ता : अभी भी पैसों के लिए थोड़ी झंझट हो जाती है, हररोज़ सुबह होते ही घर में पहली चर्चा यह होती है कि खर्चे बढ़ते जा रहे हैं तो फिर कमाई बढ़नी चाहिए न!

दादाश्री : हाँ, किन्तु वह कलह चंदूभाई करते हैं न, 'आप' तो नहीं करते न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, चंदूभाई करते हैं।

दादाश्री : चंदूभाई, तो उसके पति बन बैठे हैं न! किसी का बेटा बन बैठे हैं। है न? किसी का बाप भी बने होंगे न? और 'आप' तो किसी के बाप नहीं हो, किसी के पति नहीं हो, 'आप' ऐसे निर्लेप कहलाते हो।

टकराव हुआ, वहाँ आपकी ही भूल

प्रश्नकर्ता : टकराव होने का कारण क्या ?

दादाश्री : अज्ञानता। जब तक मतभेद होते हैं, वह आपकी निर्बलता की निशानी है। लोग गलत नहीं हैं, मतभेद में भूल आपकी है। जहाँ टकराव हुआ, वहाँ अपनी ही भूल है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु, कलह होने का कारण क्या है? स्वभाव नहीं मिलते हैं, इसलिए?

दादाश्री : अज्ञानता है, इसलिए। संसार उसी को कहते हैं कि जहाँ किसी का स्वभाव, किसी से मिलता ही नहीं। उसका एक ही रास्ता है कि यह 'ज्ञान' मिल जाए। 'एडजस्ट एवरीव्हेर!'

कोई तुझे मारे फिर भी तुझे उसके साथ 'एडजस्ट' हो जाना है।

एडजस्ट एवरीव्हेर

प्रश्नकर्ता : टकराव टालना हो, फिर भी खंभा बीच में खड़ा हो, तब हमें खिसक जाना है, किन्तु अगर खंभा ही हम पर आ गिरे, तब वहाँ क्या करें?

दादाश्री : गिरे तब खिसक जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कितना ही खिसक जाँँ फिर भी खंभा हम से टकराए बिना नहीं रहता। वाइफ से टकराव हो ही जाता है। मुझे कंटाला (चिढ़ जाना, उकता जाना) भी आता है।

दादाश्री : कंटाला आता है इतना ही नहीं, किन्तु कुछ तो समुद्र में डूब मरते हैं। ब्राँडी (दारू) पीकर आते हैं।

सबसे बड़ा दुःख क्या है? 'डिसएडजस्टमेन्ट' का, वहाँ 'एडजस्ट एवरीव्हेर' कर ले, तो क्या हर्ज़ है?

आज्ञा का पालन करना है कि 'दादा' ने कहा है कि 'एडजस्ट एवरीव्हेर।' तो एडजस्ट होता रहेगा। यदि पत्नी कहे कि 'आप चोर हो।' तो कहना कि 'यू आर करेक्ट' (आप सही हो)। और यदि थोड़ी देर बाद वह कहे कि 'नहीं, आपने चोरी नहीं की है।' तब भी, 'यू आर करेक्ट' कहना है।

पत्नी के साथ लड़ने पर रात को नींद आएगी क्या? और सुबह नाश्ता भी अच्छा नहीं मिलेगा। वह टकराए, उस समय हमें क्या करना चाहिए, वह ढूँढ निकालना।

शुद्धात्मा हो गए, तो काम बन जाए

प्रश्नकर्ता : मैं वाइफ के साथ टकराव कम तो करता हूँ, कोशिश तो करता हूँ, किन्तु खंभा ही

ऊपर गिरने लगे तो क्या करना चाहिए? चरणविधि तो हर रोज़ सुबह करते हैं, त्रिमंत्र बोलते हैं। इसलिए टकराव कुछ कम होता है। लेकिन वाइफ के साथ टकराने के ये कर्म पिछले जन्म के ही होंगे न?

दादाश्री : और क्या? यह अभी प्रत्यक्ष दिखते हैं वे ही कर्म हैं। पिछले जन्म के कर्मों से तो ये प्रत्यक्ष दिखनेवाले कर्म खड़े हुए हैं और वे ही कर्म बाधा डालते हैं।

प्रश्नकर्ता : इन कर्मों को खपाने का कोई मार्ग है क्या?

दादाश्री : शुद्धात्मा बन जाओ तो, ज्ञाता-दृष्टा बन जाओ तो, काम हो जाएगा।

पुराने करारों का करो, समभाव से निकाल

प्रश्नकर्ता : जीवन में जो कुछ घटता है वह कर्मोदय के कारण है, तो फिर कर्म या किसी संबंध की पसंदगी, वह अपनी हो ही नहीं सकती न?

दादाश्री : हाँ। यह पत्नी कुदरत ने नहीं दी है, आप खुद ही लाए हो। जिसके साथ व्यवहार जुड़ा या उसी के साथ यह व्यवहार है। यदि (पूर्व का) व्यवहार नहीं जुड़ा होता तो मिलते ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह भी पूर्व का जुड़ा हुआ है न?

दादाश्री : हाँ, पूर्व का जुड़ा हुआ है। वे ही इस जनम में मिले हैं।

एक बहन कह रही थी कि 'मुझे पति अच्छा नहीं मिला, इसलिए मेरी जिंदगी बिगड़ गई।' मैंने कहा, 'अच्छा मिला होता तो जिंदगी सुधर जाती?' मैंने कहा, 'तू नहीं जानती थी कि यह कलियुग है? कलियुग में तो पति भी अच्छा नहीं मिलता और पत्नी भी अच्छी नहीं मिलती। पसंद करने जैसा माल ही नहीं होता। इसलिए यह पसंद नहीं करना है, तुझे

तो इसका *निकाल* करना है।' यह कर्मों का हिसाब चुकाना है, यानी *निकाल* करना है। जबकि लोग आराम से पति-पत्नी बनने जाते हैं! अरे भाई, निबेड़ा ला न यहाँ से। किसी भी तरह से क्लेश कम हो, उस प्रकार निबेड़ा लाना है।

समाधान वृत्ति या समभाव से *निकाल*?

प्रश्नकर्ता : समाधान वृत्ति और समभाव से *निकाल*, इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : फर्क है। समभाव से *निकाल* और समाधान वृत्ति में। अपनी वृत्ति कैसी होती है? समाधानवाली। इसलिए जहा-तहाँ समाधान ढूँढ़ती है। और समभाव से *निकाल* यानी हमें समाधान नहीं हो, फिर भी *निकाल* करना है और समाधान हो जाए तो भी *निकाल* करना है। अर्थात् उसका *निकाल* ही करना है, समभाव से। अतः समाधान वृत्ति तो कब? रेग्युलर कोर्स में हो तभी आपको समाधान रहता है, न्याय-अन्याय दोनों देखता है। इस समभाव से *निकाल* में न्याय-अन्याय, ऐसा नहीं देखना है।

घर में खाना खाकर चिढ़कर दो-चार शब्द सुनाकर चले गए यहाँ से, तो फिर उन्हें भी पूरे दिनभर ठेठतक (पत्नी को) बोझ रहेगा, जब तक आप उनसे वापस नहीं मिलते, तबतक और आपको भी तब तक बोझ रहेगा। तो फिर आपको धीरे से बैठकर, अस्पताल में देर हो गई तो कोई बात नहीं, लाना ज़रा अंदर से इलायची लाना, लोंग लाना कहकर सब समेट लेना चाहिए और कहना 'हमारी भूलें होती हैं। और आप तो बहुत अच्छी इन्सान हो। देखो न, जल्दी में हम से कैसी भूल हो गई!' ताकि निबेड़ा आ जाए। हर्ज है उसमें कुछ?

प्रश्नकर्ता : कामकाज में, बाहर के व्यापारी के साथ, ग्राहक के साथ कुछ हो गया तो ऐसा करके समाधान कर लेता हूँ, किन्तु यहाँ घर में ऐसा नहीं हो पाता।

दादाश्री : घर में होता होगा कभी? *चीकणी फाइल* (गाढ़ ऋणानुबंधवाले व्यक्ति अथवा संयोग) होती है न! वहाँ व्यापार में तो हल्की फाइल होती है!

प्रश्नकर्ता : वहाँ तो लोभ होता है न कि, यह ग्राहक चला जाएगा! पैसे का लोभ, खुद के व्यापार की प्रतिष्ठा का लोभ। ऐसा सब होता है न! यानी वहाँ पेच-अप (ठीक) कर देता है।

दादाश्री : ऐसे तो यहाँ भी लोभ ही है न! अंदर ही अंदर ऐसा समझता है कि 'मेरी कीमत क्या रही?' ऐसे कीमत आंकने लगता है। वहाँ लोभ ही है सारा।

सँभाल ले, उसकी असल कीमत है

मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह समझे आप? बेवकूफ बनकर छूट जाना। पत्नी भी ऐसा कहेगी, 'आप घनचक्कर हो' तो कहना, 'हाँ, सच में मेरा खिसक ही गया है। वर्ना ऐसा तो बोलना चाहिए मुझे?' तब कहेगी, 'कोई बात नहीं। किन्तु ऐसी कोई झंझट नहीं करना।' अर्थात् सँभाल लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यही मुख्य बात है न! सँभाल लेने की ऐसी जो कला है, वह तो आप से ही सीखने को मिलती है।

दादाश्री : वह, हम सिखाते हैं न! हम आपको सिखाते हैं, किन्तु 'मैं घन चक्कर हूँ' ऐसा बोलना आना चाहिए न!

मैं तो हीरा बा को भी खुश कर देता था ऐसा बोलकर। बल्कि हीरा बा ऊपर से मुझ से कहतीं 'हं, आप तो बहुत अच्छे इन्सान हैं, ऐसा क्यों बोल रहे हैं?' ऐसा बोलकर सँभाल लेना चाहिए। अपनी नीयत गलत नहीं है। सँभाल लेने में यदि कभी हमें संसारी चीज़ लेनी हो तो वह गलत है। हमें तो उनका मन साफ करने के लिए सँभाल लेना है। हमने जो पत्थर डालें हैं, वे पत्थर तो बैर बाँधेगे न!

सामनेवाले के मन का समाधान करो

घर में वाइफ के साथ मतभेद हो जाए, तब उसका समाधान करना नहीं आता है, बच्चों के साथ मतभेद उत्पन्न हो जाए तो उसका समाधान करना नहीं आता है और उलझन में रहता है।

प्रश्नकर्ता : पति तो ऐसा ही कहेगा न कि 'वाइफ समाधान करे, मैं नहीं करूँगा!'

दादाश्री : हं, यानी 'लिमिट' पूरी हो गई। 'वाइफ' समाधान करे और आप नहीं करो, तब आपकी लिमिट हो गई पूरी। पुरुष को तो ऐसा बोलना है कि 'वाइफ' खुश हो जाए और ऐसा करके गाड़ी आगे बढ़ा देनी है और आप तो पंद्रह-पंद्रह दिनों, तक महीना-महीना भर गाड़ी वहीं की वहीं खड़ी कर देते हो। वह नहीं चलेगा। जब तक सामनेवाले के मन का समाधान नहीं हो जाता, तब तक आपको परेशानी रहेगी। अतः समाधान लाना चाहिए।

निश्चय समभाव से निकाल का

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का समाधान करने का हम प्रयत्न करें किन्तु परिणाम विपरीत आनेवाला है, ऐसा हमें पता चले, तब क्या करना चाहिए?

दादाश्री : परिणाम कुछ भी आए, आपको तो, इतना तय रखना है कि 'सामनेवाले का समाधान करना है'। समभाव से निकाल करने का निश्चय करना है। समभाव से निकाल करने का निश्चय करो, फिर निकाल हो या न हो, ऐसा पहले से नहीं देखना। और निकाल होगा! आज नहीं तो कल होगा, परसों होगा। चीकणा (गाढ़) रहेगा तो दो साल, तीन साल या पाँच साल में होगा। 'वाइफ' के ऋणानुबंध बहुत चीकणे होते हैं, बच्चों के चीकणे होते हैं, माता-पिता के चीकणे होते हैं, वहाँ ज़रा ज़्यादा समय लगता है। ये सभी आपके

साथ-साथ ही होते हैं, वहाँ पर निकाल धीरे-धीरे होता है। किन्तु आपने निश्चय किया है कि 'हमें समभाव से निकाल करना है', तो फिर एक न एक दिन उसका निकाल होकर रहेगा, उसका अंत आएगा। जहाँ चीकणे ऋणानुबंध हों, वहाँ बहुत जागृति रखनी पड़ती है। इतना छोटा सा साँप हो, फिर भी बहुत सावधान रहना पड़ता है। और लापरवाह रहेंगे, अजागृत रहेंगे तो समाधान नहीं हो पाएगा। सामनेवाला व्यक्ति बोल जाए और आप भी बोल देते हो, बोलने में भी हर्ज नहीं है, किन्तु बोलने के पीछे आपका ऐसा निश्चय है कि, 'समभाव से निकाल' करना है, इसलिए द्वेष नहीं रहता, बोल देना वह पुद्गल का है और द्वेष रखने के पीछे खुद का आधार रहता है। अतः 'समभाव से निकाल' करना है ऐसा निश्चय करके काम किए जाओ, हिसाब चुकता हो ही जाएगा। और लेनदार को आज नहीं दे पाए तो कल दे पाओगे, होली पर दोगे, वर्ना दिवाली पर दोगे इसलिए लेनदार यानी लेनदार तो लेकर ही जाएँगे।

कोई क्लेम पेन्डिंग नहीं रखना है

प्रश्नकर्ता : मैं कोई गहना माँगू, तो मेरे पति का ऐसा कहना है कि 'यह तो तुझे तभी लेना चाहिए जब अपने परिवार के बुरजुगों दें। मैं सीधा तुम्हें दूँगा तो हमारे बुरजुगों का जो रिवाज है उसे तोड़ दिया ऐसा कहा जाएगा और ऐसा ठीक नहीं कहलाएगा। किन्तु मैं ऐसा कहती हूँ कि अन्य सारी बहुएँ चुप-चाप (गहना) बनवा लेती है। सिर्फ मुझे अकेली को ही नहीं, तो इसका समाधान कैसे लाना चाहिए?

दादाश्री : जब तक यह फाइल शेष रहेगी तब तक आपको (पति को) एक-दो जन्म बढ़ जाएँगे। उससे अच्छा है समाधान करके फाइल का निकाल लाना चाहिए। यह तो फाइल नं-२ (पत्नी) है किन्तु यदि फाइल नं-१०० भी हो तो भी समाधान लाओगे

दादावाणी

तभी, वर्ना तो *निकाल* किए बगैर वह फाइल आपको मोक्ष में नहीं जाने देगी। हिसाब चुकाना पड़े ऐसी यह दुनिया है। नहीं माँगे फिर भी देकर छुट्टा करना। वर्ना फिर से क्लेम (दावा) करेगी। वह माँगती है, उसका भी कारण है कि उसके पीछे कॉज़ेज़ (कारण) हैं। अब बगैर कॉज़ेज़ के कुछ भी नहीं होता। यानी कॉज़ हैं, इसलिए उस बारे में सेफ कर लो। और बिना कॉज़ के तो इस वर्ल्ड में कोई भी नाम नहीं लेगा। आसपास बाध रहता हो और यदि बीच में सो जाएँ, फिर भी कोई नाम नहीं लेगा, अगर कॉज़ नहीं है तो। और कॉज़ होगा तो ऐसा सब खड़ा हो जाता है। अर्थात् इसका समभाव से *निकाल* कर डालो अब।

प्रश्नकर्ता : यह सही है, *निकाल* कर देना चाहिए। अब मैं पूछता हूँ कि पत्नी की माँगो का किस तरह से *निकाल* करूँ?

दादाश्री : 'इस रकम का, तुम्हें जहाँ ठीक लगे वहाँ उसका उपयोग करना, मैं हस्तक्षेप नहीं करूँगा' ऐसा कह देना है। उन्हें, पत्नी को संतोष हो गया वही है समाधान। अब और किसी मामले में कुछ क्लेम है? कितनी चीज़ों में है?

प्रश्नकर्ता : दादा, गहने तक की ही बात है, और कुछ नहीं।

दादाश्री : तो फिर वह तो निपटा देना। कभी न कभी *निकाल* लाए बगैर चारा नहीं है, तो फिर अब इसका *निकाल* कर दो। यदि कोई चारा ही नहीं है तो पहले से ही क्यों नहीं करें?

समभाव यानी क्या?

प्रश्नकर्ता : दादाने फाइलों का '*निकाल* करो' ऐसा नहीं कहा है बल्कि फाइलों का 'समभाव से *निकाल* करो' कहा है, उसका क्या कारण है? समभाव में क्या आता है?

दादाश्री : समभाव यानी कि आपको उन

पर आसक्ति रहना। वह गलत कहलाता है। आसक्ति नहीं आने देनी है। नापसंद हो, ऐसा कुछ कर दे तो द्वेष नहीं होने देना है। खुश-नाखुश नहीं होना है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु आपने जो समताभाव कहा है न, वह नहीं रह पाता।

दादाश्री : समताभाव रखना नहीं है, समभाव से फाइलों का *निकाल* करना है। समभाव किसे कहा जाता है कि आपको यदि कोई गाली दे न, तो उस पर द्वेष नहीं होना चाहिए और कोई अच्छा बोले, तो राग नहीं होना चाहिए। अच्छे पर राग नहीं और गलत पर द्वेष नहीं हो, वह है समभाव। इस तरह से समभाव से *निकाल* करो। समभाव से *निकाल* का अर्थ तो समझना चाहिए न? वह ज्ञानीपुरुष से समझना चाहिए। इस ओर गालियाँ दे रहा हो और दूसरी ओर फूल चढ़ा रहे हों, तो फूल चढ़ानेवाले पर राग नहीं और गाली देनेवाले पर द्वेष नहीं।

समभाव, वहाँ नहीं राग-द्वेष

मन में राग-द्वेष रहित तरीके से *निकाल* करना है, और कुछ नहीं करना है। कोई आपको कोर्ट में ले जाए, तो वहाँ भी राग-द्वेष नहीं करने हैं। सामनेवाले पर कभी-भी, किसी भी क्रिया में राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। भगवान के घर सही-गलत है ही नहीं। इन डिस्चार्ज कर्मों का (समभाव से) *निकाल* करना है।

डिस्चार्ज में राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। डिस्चार्ज वह भरा हुआ माल कहलाता है। उसमें हम एकाकार नहीं होते हैं, अतः वह राग-द्वेष नहीं कहलाता। जहाँ नया माल भरना हो, वहाँ राग-द्वेष होते हैं। ज्ञानदशा में डिस्चार्ज हों न, तो समभाव से *निकाल* कर दो!

समभाव यानी मुनाफा और नुकसान को समान नहीं कहना है, किन्तु अगर मुनाफे के बदले नुकसान

हो जाए फिर भी हर्ज नहीं, मुनाफा आए तो भी हर्ज नहीं। मुनाफा से उत्तेजना नहीं होती और नुकसान से डिप्रेशन नहीं आता। यानी कुछ भी नहीं। द्वंद्वतीत होते हैं। यह पूरा जगत् तो द्वंद्व में फँसा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* करना यानी निगल जाना? तो क्या ऐसा भाव रखना चाहिए या फिर वर्तन में आना चाहिए?

दादाश्री : यदि निगल जाए, तो वह समभाव में रहा, ऐसा नहीं कहा जाएगा। हमें मन में भाव ही करना है कि 'समभाव से *निकाल* करना है।' हमें किसी शहर में जाना है ऐसा नक्की करें, और नहीं जा पाएँ तो उसमें हर्ज नहीं है, किन्तु आपको नक्की करना है। पहले आप ऐसा नक्की नहीं करते थे कि मुझे समभाव से *निकाल* करना है। अर्थात् यह परंपरा हुई। अब आप नक्की करते हो, फिर भी एक्सिडेंट हो जाए, तो वह अलग बात है, किन्तु हर समय नक्की करना है। निगल नहीं जाना है, उसे निगल गए या बाहर निकल गया वह बात अलग है। दोनों ही उल्टी हैं। उल्टी हो रही हो, तो उसे दबाना नहीं है। उल्टी को दबाने से रोग होगा(होता है)।

आप ऐसे समभाव से *निकाल* करें, उसी को कहते हैं कि शुद्धात्मा हाज़िर है, भले ही दिखे नहीं। फिर अगर चंदूभाई चिढ़ गए तो वह बात अलग है और समभाव से *निकाल* करनेवाले आप, वे दोनों अलग हैं।

समता और समभाव में फर्क क्या?

प्रश्नकर्ता : किन्तु समता रखकर भी *निकाल* हो सकता है न! यदि यह मुझे मारें, लेकिन मैं ऐसा कहूँ कि 'नमस्कार', तो वह पूरी समता हो गई न!

दादाश्री : नहीं, उसे समता नहीं कहते। उसे समभाव से *निकाल* करना कहते हैं। समता तो कैसी होती है कि वह मार रहा हो और खुद उसे आर्शीवाद

दे, तब समता होती है। भीतर बिल्कुल भी परिणाम नहीं बदले, वह समता है और यह तो *निकाल*, यानी कुछ परिणाम बदल जाते हैं किन्तु *निकाल* कर देता है। फिर बात आगे बढ़ाता नहीं। वह बढ़ता नहीं है, वह कम हो जाता है।

समभाव यानी क्या? यह तराजू इस तरफ झुक जाए तो दूसरी ओर थोड़ा कुछ रखकर समान करना। तो यह मेढक की पाँचशेरी कितनी देर टिकती है? फिर भी समभाव को उत्तम भाव माना गया है। बेलेन्स रखने का प्रयत्न करता है न? और समता यानी यदि कोई फूल चढ़ाए उस पर राग नहीं और पत्थर मारे तो उस पर द्वेष नहीं, ऊपर से उसे आर्शीवाद देता है!

अपने ही चीकणे कर्म

प्रश्नकर्ता : क्या इस वजह से हमें दुःख भुगतना पड़ता है कि कर्म *चीकणे* होते हैं?

दादाश्री : खुद के ही किए हुए कर्म हैं, अतः खुद की ही भूल है। इस जगत् में किसी अन्य का दोष है ही नहीं, अन्य तो निमित्त मात्र हैं। दुःख आपका है और सामनेवाले निमित्त के हाथों दिया जाता है। पोस्टमेन ससुर की मृत्यु की चिट्ठी देकर जाए तो उसमें पोस्टमेन का क्या दोष?

प्रश्नकर्ता : *चीकणे* कर्म किन्हें कहते हैं?

दादाश्री : मन-वचन-काया की संपूर्ण एकाग्रता से करें जिसमें कि अन्य विरोधाभासी भाव नहीं हों, तो उससे भयंकर गाढ़ कर्म बंधते हैं। 'यहाँ' आत्मार्थे किए हुए ऐसे गाढ़ कर्म दो या तीन जन्मों में छुड़वाते हैं और संसार के गाढ़ कर्म तो परिपक्व होने में बहुत समय लेते हैं। इसीलिए तो यह संसार कायम है न!

देखते रहने से खत्म होते हैं कर्म

प्रश्नकर्ता : तो वे *चीकणे* कर्म किस तरह जल्दी खत्म होंगे?

दादावाणी

दादाश्री : शुद्धात्मा में रहने से जल्दी पूरे हो जाएँगे। यदि *चीकणे* कर्मों में नहीं चिपटें और उन्हें 'देखते' रहें तो वे जल्दी खत्म हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : वह प्रोसेस (प्रक्रिया) तो चल ही रहा है।

दादाश्री : बस, तो खत्म हो जाएँगे, देर नहीं लगेगी। घर की फाइलों के साथ *चीकणे* कर्म लेकर आए हैं। बाहर की फाइलों के साथ हल्के होते हैं। घर की फाइलों के साथ *चीकणे* होते हैं, ऐसा अनुभव है न?

अभी किसी के साथ ट्रेन में पहचान हुई और किसी ने चाय पिलाई, तो वे सब फीकी फाइलें। किन्तु इन *चीकणी फाइलों* का *निकाल* करना तो बहुत कठिन होता है। आप समभाव से *निकाल* करो फिर भी बार-बार गाढ़ापन आता है वापस। 'समभाव से *निकाल* करना ही है।' इतना ही आपको बोलना है, फिर अपने आप हो जाएगा। क्योंकि ये फाइलें लंबे अरसे-से चिपटी हुई हैं और बड़ा हिसाब तय हो गया है!

वहाँ, काम लेना समझदारी से

यह *चीकणी* पट्टी हो, और यहाँ चिपक गई हो, तो हम उसे उखाड़ने जाएँ, तो बाल भी उखड़ जाते हैं। अतः जहाँ बहुत गाढ़ा हो, वहाँ तो ज़रा मुश्किल हो जाता है न! फीकी फाइल हो तो बहुत अच्छा, यों बोलते ही छूट जाती है। वहाँ कोई झंझट ही नहीं है न! *चीकणी फाइल* तो बहुत जटिल होती है।

हम पट्टी उखाड़ें तो बाल भी टूट जाते हैं, ऐसी गाढ़ फाइलें बहुत कम होती हैं। तो उन फाइलों के साथ ज़रा सँभलकर काम लेना चाहिए। उस पट्टी पर पानी डालकर, गीली करके धीरे-धीरे उखाड़ना चाहिए। वर्ना अगर बाल समेत पट्टी उखड़ जाए न तो कितनी

जलन होती है! एक पट्टी यदि इतना दुःख देती है, तो 'ये पट्टियाँ' तो कितना दुःख देंगी? ये फाइलें वे भी पट्टियाँ ही हैं। उनका आत्मा जुदा है, किन्तु यह फाइल यानी पट्टियाँ। पट्टी उखाड़ते समय जल्दी से उखाड़ दें तो? बाल भी उखड़ जाएँगे। तब लोग कहेंगे, 'अरे, ऐसे ज़ोर से नहीं उखाड़ते।' और उखाड़नेवाले को डाँटेंगे न! इसलिए हमें तो कहे अनुसार करना चाहिए। गरम पानी करवाकर, पट्टी पर धीरे-धीरे पानी लगाकर, समझा-बुझाकर धीरे-धीरे निकालनी चाहिए। ये सारी पट्टियाँ ही चिपटी हुई हैं। वे कैसी हैं? साथ में बाल भी उखाड़ लेंगी यानी बैर बाँधेगी। अतः अगर सँभलकर काम लेंगे तो एक भी बाल नहीं उखड़ेगा।

गाढ़ापन दूर होगा वीतरागता से

पहले उनके शुद्धात्मा देख लेना चाहिए। रिलेटिव और रियल देख लिया। और फिर आपने उसका समभाव से *निकाल* करना नक्की किया होगा, तो समभाव से *निकाल* हो जाएगा। सामनेवाली फाइल टेढ़ी हो तो *निकाल* नहीं होगा। आपको वह नहीं देखना है। आपका तो निश्चय है कि, समभाव से *निकाल* करना है, फिर क्या होता है, उसे देखना।

प्रश्नकर्ता : हम कहते हैं कि कुछ फाइलें *चीकणी* हैं, किन्तु वह गाढ़ापन किसका है? उसे *चीकणी* कौन करता है?

दादाश्री : वह तो करनेवाला भुगत रहा है न अभी। *चीकणी* की है, तभी तो करनेवाले को भुगतना पड़ता है न!

प्रश्नकर्ता : दादा, *चीकणी* तो अन्योन्य के कारण होती है न? अकेले के कारण नहीं भी हो सकती न?

दादाश्री : वह तो अन्योन्य के कारण ही होती है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : चीकणी फाइलें हों, तो उन्हें दूर किस तरह करें?

दादाश्री : दूर कर ही नहीं सकते?

प्रश्नकर्ता : दूर अर्थात् गाढ़ापन दूर किस तरह करें?

दादाश्री : वीतरागता से। गाढ़ापन तो विलय होता ही रहेगा निरंतर, किन्तु यदि आप गाढ़ा करोगे तो फिर से खड़ी हो जाएगी। आप वीतरागता दिखाएँगे तो छूटती जाएगी। यानी आपको समभाव से निकाल करना है, वह वीतरागता का ही भाग है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु यदि हमसे कुछ अधिक चीकणा हो जाए तो फिर प्रतिक्रमण करना पड़ेगा न?

दादाश्री : हाँ, यदि जरूरत पड़े तो प्रतिक्रमण करना, वह भी आपको नहीं करना है। वह भी चंदूभाई से कहना है कि, 'भाई, प्रतिक्रमण करो!' ये अतिक्रमण आप कहाँ करते हो? अतिक्रमण तो चंदूभाई ने किया है, वहाँ चंदूभाई से कहना कि प्रतिक्रमण करो।

प्रश्नकर्ता : संसार का सबसे बड़ा कार्य है, समभाव से निकाल करना।

दादाश्री : बस।

निकाल होने से, निबटेंगे पिछले संबंध

प्रश्नकर्ता : जब तक फाइलों का निकाल नहीं हो पाता, तब तक हम बंधे हुए रहेंगे न?

दादाश्री : नहीं, आप बंधे हुए नहीं हो। आपको तो ऐसा बोलना है कि 'फाइल का समभाव से निकाल करना है।' ऐसा नक्की रखना है।

प्रश्नकर्ता : संबंध तोड़ने से टूटता नहीं है न?

दादाश्री : तोड़ने से तो बल्कि संबंध बढ़ते

हैं, निकाल करने से हल आएगा। (घर की) पार्लियामेन्ट में रहकर संबंध का निकाल करना है, पार्लियामेन्ट से अलग होकर नहीं!

'फाइल का समभाव से निकाल करना है,' बस इतना ही काम करना है। यह तो 'व्यवस्थित' ही है, उसमें चिंता-उपाधि करने जैसा है ही नहीं। काम किए जाओ। हम क्या कहते हैं? जितना काम हो सके, उतना करते रहो। फिर व्यवस्थित है। किन्तु आपको भय रखने का कोई कारण नहीं है।

प्रश्नकर्ता : समभाव से फाइल का निकाल तो करते हैं, किन्तु फिर भी मन में उद्वेग रहे, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : मन में उद्वेग हो या अधोवेग हो, जो भी वेग हो, उसे 'देखते' रहना। आपको ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में रहना है। अन्य सभी चीजें जड़ हैं। चेतन जैसी दिखती हैं, किन्तु हैं जड़।

किया हुआ तो भुगतना पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : अब मेरा ऐसा है कि फाइल नं.२ मुझ से एकदम विरुद्ध है। इसलिए उसके साथ मेरा संघर्ष होता है और समभाव से निकाल नहीं हो पाता।

दादाश्री : किन्तु आपको तो चंदूभाई से कहना है कि 'समभाव से निकाल करो न।' फिर भी अगर बहुत चीकणा होगा, निकाचित होगा तो देर लगेगी।

प्रश्नकर्ता : अन्य के साथ कुछ हो जाए, तो सहज हो जाता है लेकिन यहाँ पर नहीं हो पाता।

दादाश्री : सँभल-सँभलकर करो न अब। जलन नहीं हो ऐसे धीरे से पट्टी उखाड़ते हैं न, उसी तरह।

प्रश्नकर्ता : मेरे और मेरी वाइफ के बीच

क्रोध और कहा सुनी वगैरह हो जाता है, तो मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : क्रोध तू करता है या वह? क्रोध कौन करता है?

प्रश्नकर्ता : वह, तो फिर मुझ से भी हो जाता है।

दादाश्री : तो तुम्हें भीतर ही खुद को उलाहना देना है कि, 'तू क्यों ऐसा कर रहा है? किया हुआ तो भुगतना ही पड़ेगा न!'

मित्र-पत्नी वगैरह जो भी मिलते हैं, वे तुम्हारी पसंद के ही हैं। पहले तुम पसंद करते हों, फिर वह इच्छा कुदरत में जाती है और मंजूर होकर व्यवस्थित में आती है। पूर्वजन्म में जो व्यवहार हो गया है, वही इस जन्म में आता है। अतः सभी संबंध समभाव से निभा लेना।

वास्तव में आप पति-पत्नी हो?

आप क्या वास्तव में पति-पत्नी हो? वाइफ और हज़बेन्ड हो? और वह भी व्यवहार से हो, वास्तव में एकज़ेक्टली ऐसा नहीं है। यह तो आप व्यवहार से (पति-पत्नी) हो। नाम ने नाम से विवाह किया है, जबकि आप खुद अनामी हो।

प्रश्नकर्ता : आपके कहे अनुसार व्यवहार से पत्नी हूँ, वर्ना नहीं?

दादाश्री : वास्तव में पत्नी नहीं, व्यवहार से पत्नी। वर्ना वास्तव में पत्नी हो जाए तो हो गया न? फिर आपके पास रहा ही क्या फिर?

वास्तव में ऐसा है ही नहीं। यह सब नहीं जानने की वजह से स्त्री-पुरुष, पत्नी-बच्चे वगैरह, ऐसा मान बैठे हो। लोग कहते हैं कि 'आप इनकी पत्नी हो।' उसमें तो हर्ज नहीं है लेकिन ऐसा मान नहीं लेना है। लोग तो कहेंगे ही। देखेंगे वैसा नहीं

बोलेंगे कि ये पति-पत्नी हैं। किन्तु आप मान बैठो तो उल्टा हो जाएगा न? मान लेने से मान्यता का भूत आपसे चिपट जाएगा। सिर्फ बिलीफ ही बैठ गई है।

रात को एक पेड़ पर सभी पक्षी आकर बैठ जाँ न, तो वे संबंधी जैसे दिखते हैं। उन पक्षियों में ऐसी बुद्धि नहीं है, अतः वे संबंध नहीं जोड़ते जबकि यहाँ तो विवाह करते हैं। पहले गौने के लिए जाए, दूसरे गौने के लिए जाए फिर बस हंगामा ही हंगामा। ये सब हिसाब से मिलते हैं और फिर सब पक्षी भोर होते ही उड़ जाते हैं, ऐसा है। कभी न कभी तो ये चिता में जाने ही वाले हैं न!

समझो, क्रीमत वचनबल की

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हमारा तो फाइल के साथ वैचारिक मतभेद बढ़ते जा रहे हैं?

दादाश्री : किन्तु मतभेद किसलिए बढ़ते जा रहे हैं? आपको समभाव से *निकाल* करने की आज्ञा का पालन करना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : किन्तु समभाव से *निकाल* करने की आज्ञा का पालन करने के बावजूद भी यही परिस्थिति रहा करती है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। 'समभाव से *निकाल* करना है,' उस आज्ञा का पालन करोगे, तो कोई खड़ा नहीं रहेगा। उस वाक्य में इतना अधिक वचनबल है कि न पूछो बात!

यह विज्ञान एकज़ेक्ट और फलदाई

प्रश्नकर्ता : हालाँकि समभाव से *निकाल* करने में एकपक्षीय विचारणा ही हुई न?

दादाश्री : एकपक्षीय नहीं कहना है। आपको तो, समभाव से *निकाल* करना है, इतना ही नक्की करना है। फिर वह अपने आप ही होता रहेगा। नहीं हो पाए, फिर भी प्याज़ की एक परत तो निकल ही

दादावाणी

जाएगी। फिर प्याज़ की दूसरी परत दिखेगी। यानी दूसरी बार में दूसरी परत उतरेगी, ऐसा करते-करते प्याज़ खत्म हो जाएगी। यह तो विज्ञान है! यह तुरंत ही फलदाई है, एक्ज़ेक्टनेस है। ये चंदूभाई क्या करते हैं, वह आपको देखते रहना है। सामनेवाले व्यक्ति में शुद्धात्मा देखना है और फाइल के तौर पर समभाव से निकाल करना है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, यदि समभाव से निकाल करने में हमें व्यावहारिक मुश्किल आए तो....

दादाश्री : व्यावहारिक मुश्किलें तो आएँगी और जाएँगी। एब एन्ड टाइड (ज्वार भाटा), रोज समुद्र में पानी बढ़ता है और घटता है, दोनों वक्त ज्वार-भाटा होता ही रहता है।

ज्ञाता-दृष्टा रहना, सिर्फ वही उपाय है।

प्रश्नकर्ता : हमारे मतभेद उस कक्षा के हैं कि साथ रह ही नहीं सकते।

दादाश्री : फिर भी लोग समभाव से निकाल करके इतनी अच्छी तरह से रह सके हैं न! और अलग होकर भी क्या फायदा होगा?

प्रश्नकर्ता : उसकी समझने की तैयारी ही नहीं होती है, किसी भी संबंधी के साथ अनुकूल नहीं आता किसी के साथ व्यवहार ही नहीं रखना है इस तरह रहे तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तरीका नहीं रखना है, किस तरह रहा जाता है, वह देखना है। डिज़ाइन का रास्ता नहीं है यह। यह ज्ञान डिज़ाइनवाला नहीं है। किस तरह रहा जाता है, उसे देखना है।

प्रश्नकर्ता : भले ही वह तरीका व्यावहारिक तरह से योग्य है या अयोग्य है?

दादाश्री : वह आपको नहीं देखना है। आपको तो इस तरह (ज्ञान) से रहना है। शांति चाहिए तो,

आनंद चाहिए तो इस तरह से रहना। वर्ना फिर वह व्यवहारिक रीत अपनाओ। डिज़ाइन बनाई तो मार खाओगे। और कुछ नया नहीं मिलेगा। अज्ञानता की निशानी यह है कि मार खाता है, और कुछ नहीं। इसे ओवरवाइज़ कहते हैं। ऊपर से अपना सयानापन दिखाने जाता है। तत्वदृष्टि मिलने के बाद किसलिए और कुछ देखना है? (तत्वदृष्टि) नहीं मिली होती तो और कुछ था ही न!

प्रश्नकर्ता : फिर इसे कर्मबंधन मानकर सहन करते रहना है, इस परिस्थिति को?

दादाश्री : कुछ भी नहीं मानना है। आपको मानना क्यों है? आपको 'ज्ञाता-दृष्टा' ही देखना है। क्या होता है उसे देखना है, वॉट हेपन्स! कल घर पहुँचने के बाद खाना मिला था या नहीं मिला था?

प्रश्नकर्ता : खाना तो मिलता ही है!

दादाश्री : तो क्या परेशानी है? खाना मिलता है, सोने की जगह मिलती है! और क्या चाहिए? पत्नी नहीं बोले तो 'रहे अपने घर, आज उस तरफ सो जा' कहना। वह नहीं बोले तो क्या उसे थोड़े ही कहेंगे? नहीं कह सकते। इसलिए नई झंझट तो करना ही नहीं। एक ही जन्म अगर ज्ञानी की आज्ञा के अनुसार चले तो मौज रहेगी। और वह भी खुद के सुख सहित रहेगी।

पुद्गल की कुश्ती, देखो समभाव से

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला गाली दे तब समभाव नहीं रहता, इतनी ही अड़चन है।

दादाश्री : वह अड़चन अब नहीं आएगी। (अड़चन) अब फिर से मत बोलना। पहले चंदूभाई था न, तब अड़चन आती थी न? वही तू अब शुद्धात्मा हो गया है, तुझ में पूरा ही परिवर्तन हो गया है, अतः अब अड़चन नहीं आएगी। वह भी व्यवहार

दादावाणी

से, बाय रिलेटिव व्यू पॉइन्ट से, वह नाम से हैं और रियल व्यू पॉइन्ट से शुद्धात्मा है। यदि वह शुद्धात्मा है तो वह जो गाली दे रहा है, वह तो रिलेटिव कर रहा है। और वह भी फिर, आपको नहीं दे रहा है गाली, इस रिलेटिव से कह रहा है। अतः पुद्गल की कुशती कर्म के आधीन होती है, उसे देखा करो। दो पुद्गल कुशती करें, उसे आप देखा करो, कौन जीता और कौन हारा और किसने तमाचा मारा, उसे देखा करो। नहीं देख सकते? बाहर कुशती देखने नहीं गए? तो अब यह देखना। बल्कि यह पुद्गल की कुशती, उसका पुद्गल तेरे पुद्गल से झगड़ा, कर्म करे, वह उदयाधीन है, उसमें किसी का गुनाह है क्या? वह शुद्ध ही दिखना चाहिए। ऐसा कुछ दिखता है या नहीं दिखता आपको?

प्रश्नकर्ता : वहीं अड़चन आती है अभी, वहाँ समभाव नहीं रहता।

दादाश्री : कैसे नहीं रहता? किसे नहीं रहता? वह तो चंदूभाई को नहीं रहता है, इसमें आपको क्या लेना-देना? बिना बात के चंदूभाई का इतना खींचते रहते हो।

प्रश्नकर्ता : ऐसा जुदा ही नहीं रह पाता न!

दादाश्री : हो गया है जुदा। वह आपको वर्तन में सेट करना पड़ेगा। ऐसे खिसक जाए तो आपको फिर धक्का मारकर खिसकाकर ठीक करना पड़ेगा। जुदा हो गया है, इसलिए तो क्या दो दिन हैंडल नहीं मारना पड़ेगा?

'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा रहे तो विषमता हुए बगैर रहेगी ही नहीं और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो फिर समभाव से निकाल हो गया।

इतना ही है अपना धर्म

प्रश्नकर्ता : किसी भी संयोग में समभाव से निकाल ही करना है?

दादाश्री : समभाव से निकाल करना, बस इतना ही अपना धर्म है। कोई फाइल ऐसी आ गई, तो आपको नक्की करना है कि समभाव से निकाल करना है। अन्य फाइलें तो एडजस्टमेन्टवाली होती हैं, उसे तो कुछ बहुत जरूरत नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जहाँ टोटल डिसएडजस्टमेन्ट हो, वहाँ फिर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : समभाव से निकाल करने का भाव आपको मन में नक्की करना है। 'समभाव से निकाल करना है' इन्हीं शब्दों का उपयोग करना है।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला कोई एडजस्टमेन्ट नहीं ले तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह नहीं ले तो उसे हमें नहीं देखना है।

देखते रहो, परिणाम व्यवस्थित के ताबे में

प्रश्नकर्ता : किन्तु फिर हमें क्या करना चाहिए? अलग रहना है?

दादाश्री : आपको देखते रहना है। और तो कुछ उसके या आपके ताबे में नहीं है। अर्थात् जो भी हो, उसे आप देखो। अलग हो जाए तो भी हर्ज नहीं है। अपना ज्ञान ऐसा नहीं कहता कि आप अलग मत होना या अलग हो जाना, ऐसा भी नहीं कहता। क्या होता है, उसे देखते रहना है। अलग हो गए तो भी कोई विरोध नहीं करेगा, कि क्यों आप अलग हो गए और साथ रहोगे तो भी कोई परेशानी नहीं। किन्तु डिसएडजस्टमेन्ट गलत चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : यदि स्वभाव ही विरोधी हो तो फिर वह चेन्ज किस तरह हो सकता है?

दादाश्री : जगत् का नाम ही है विरोधी स्वभाव। जगत् का अर्थ ही है विरोधी स्वभाव। और उस विरोधी का निकाल नहीं करेंगे तो विरोध तो

रोज़ ही आएगा और अगले जन्म में भी आएगा! उससे अच्छा है यहीं पर हिसाब चुका दो, उसमें क्या गलत है? आत्मा प्राप्त होने के बाद हिसाब चुका सकते हैं।

‘आज्ञा का पालन करना है’ इतना बोलना है बस। अन्य एडजस्टमेंट तो किसके हाथ में है? व्यवस्थित के हाथ में।

आप समभाव से *निकाल* करने का नक्की करोगे, तो आपका सब ठीक हो जाएगा। उस शब्द में जादू है। वह अपने आप ही सारा निबेड़ा ला देगा।

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* करना, यानी सामनेवाला व्यक्ति जो कुछ भी कहे, उसके लिए राज़ी हो जाएँ?

दादाश्री : वह कहे कि ‘यहाँ बैठिए’ तो बैठना। वह कहे ‘बाहर निकल जाइए’ तो बाहर चले जाना। वह व्यक्ति कुछ नहीं करता है, यह तो व्यवस्थित करता है। वह बेचारा तो निमित्त है। बाकी, ‘हाँ में हाँ’ नहीं मिलानी है, किन्तु चंदूभाई किसके लिए राज़ी होते हैं या मना कर रहे हैं, उसे ‘आप’ देखें। और फिर ‘हाँ में हाँ’ मिलाना, ऐसी कोई सत्ता आपके हाथ में नहीं है। व्यवस्थित आपसे क्या करवाता है उसे देखना है। यह तो आसान बात है, उसे लोग उलझा देते हैं।

प्रश्नकर्ता : ‘समभाव से *निकाल* करना’ उसमें कोई क्रिया है?

दादाश्री : कोई क्रिया नहीं है। मन में निश्चय करना है कि ‘मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है। समभाव से *निकाल* करना है।’ वही बस। फिर कोई क्रिया नहीं करनी है। ‘समभाव से *निकाल* करना है’, वही आपका भाव। फिर क्या हुआ वह अलग बात है। लेकिन उसका साइन्टिफिक असर है।

आप यदि इस तरह अंदर नक्की करोगे, तो उसका सामनेवाले पर असर पड़ता है और साइन्टिफिक प्रकार से हेल्प होती है और अगर आप भीतर से नक्की करोगे कि ‘आज मुझे उसे सीधा कर डालना है,’ तो उसका भी असर उस पर पड़ेगा। यानी कि यह बहुत ही सुंदर हथियार दिया है, ‘समभाव से *निकाल* करो।’

आपके मन में पहले जो रहता था कि ‘यह आदमी क्या समझता है अपने मन में,’ आपके वे उल्टे भाव होते थे। अब ऐसा नहीं होना चाहिए। वह आपको कुछ भी करे, ‘सामनेवाला आदमी कितनी भी गड़बड़ करे फिर भी मुझे उसकी आपत्ति नहीं, मुझे समभाव से *निकाल* करना है,’ ऐसा नक्की करना है। फिर वैसा ही होता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* करना, ऐसा आपने जो बताया है, वह आज के जमाने में कैसे संभव हो सकता है? रोज़ की जिंदगी में हम कैसे जान पाएँगे कि यहाँ शस्त्र उठाने जैसा है या नहीं?

दादाश्री : शस्त्र नहीं उठाने हैं। सामनेवाला उठाए फिर भी आपको नहीं उठाना है। वह नहीं उठाए तो भी नहीं उठाना है। आपको तो *निकाल* ही कर लेना है। आपको कुछ जानने-करने की ज़रूरत नहीं है। ‘समभाव से *निकाल* करना है,’ इतना ही वाक्य आपके मन में रखना है। यह तो अक्रम विज्ञान है। आज्ञा में ही रहना है, तो फिर आपका कोई इतना भी नाम नहीं ले सकता।

***निकाल* करो, बैर नहीं बंधे उस तरह**

प्रश्नकर्ता : यदि सामनेवाला व्यक्ति अलग होने में खुश हो, तो क्या हमें अलग हो जाना चाहिए?

दादाश्री : वह तो अच्छा है, बहुत अच्छा है, अन्य कहीं पर तो मार-मारकर दम *निकाल* दे!

आपको मारा तो नहीं है न? तो बहुत अच्छा! कहना 'मेरे तो धन्यभाग्य'!

प्रश्नकर्ता : किन्तु उसे तो खुद के तरीके से रहना होता है।

दादाश्री : आप कल्पनाएँ किसलिए करते हों कि वह ऐसा करेगा?

प्रश्नकर्ता : वे कर ही रहे हैं, उसे हम अनुभव कर ही रहे हैं।

दादाश्री : नहीं। अनुभव हो रहा हो, फिर भी आपको कल्पना नहीं करनी है। इस कल्पना से ही यह सब खड़ा हो गया है! बिल्कुल सीधा है और समभाव से *निकाल* करने की हमारी आज्ञा का पालन करे न, तो एक बाल जितनी भी मुश्किल नहीं आएगी और वह भी सभी साँपों के बीच में!

यह तो आपने ही यह सब *चीकणा* किया है। अतः अन्य कोई उपाय नहीं है। बीज को भूने से निबेड़ा आएगा। यह समभाव से *निकाल* करने का नियम क्या कहता है, 'कैसे भी करके उनके साथ बैर नहीं बंधे, तू ऐसे (निकाल) कर ले। बैर से मुक्त हो जा।'।

तरीके से करो तो सुलझ जाएगी गुत्थियाँ

चंदूभाई वाइफ पर चिढ़ रहे हों, तब चंदूभाई से कहना 'किसलिए ऐसा कर रहे हो? पूरी जिंदगी ऐसा ही किया है।' आपको खुद अपनी जात को *ठपका* (उलाहना) देना चाहिए। आमने-सामने *ठपका* दोगे न तो क्लेश होगा, और आपको चंदूभाई से कहना नहीं हो सकेगा? चंदूभाई से कहना, 'ऐसा क्यों कर रहे हो? घर में तो एक फैमिली है अपनी!'

गलत हो जाए वहाँ पर (फाइल नं-१ को) *ठपका* देना चाहिए। कंधा थपथपाना और *ठपका*

देना। फिर कंधा थपथपाकर कहना, 'हम हैं आपके साथ।' ऐसे करते-करते सब कुछ राह पर आ जाएगा।

आप जो करते हो वह मुश्किल है, जबकि ऐसे तरीके से करना आ जाए तो आसान है सब। यह तो उलझनवाला कर देते हो। ऐसा सबकुछ तो बहुत समय तक किया। अभी रहने दो न यह उलझन। उलझन तो कठिन कहलाती है।

प्रयोग करके तो देखो

तू 'चंदूभाई' को आईने के सामने बिठाकर ऐसे प्रयोग करना। आईने में तो चेहरा वगैरह दिखता है। फिर आप 'चंदूभाई' से कहना, 'तूने ऐसा क्यों किया? तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। वाइफ के साथ मतभेद क्यों करते हो? वर्ना फिर शादी क्यों की? शादी करने के बाद ऐसा क्यों कर रहे हो?' ऐसा सब कहना पड़ता है। ऐसे आईने में देखकर एक-एक घंटा *ठपको* दोगे तो बहुत शक्ति बढ़ जाएगी। तुझे चंदूभाई की सभी भूलों का पता चलता है न? जितनी भूलें दिखाई दें, यदि एक घंटे तक आप चंदूभाई को आईने के सामने बिठाकर वे सभी बता दो तो वह सबसे बड़ी सामायिक है!

ढूँढो, भूल कहाँ हो रही है?

प्रश्नकर्ता : सहनशीलता की लिमिट कितनी रखनी चाहिए?

दादाश्री : उसे कुछ हद तक सहन करना। फिर सोचकर पता लगाना कि वास्तव में क्या है यह? सोचोगे तो पता चलेगा कि इसके पीछे क्या है! सिर्फ सहन करते रहोगे तो सिंग उछलेगी। सोचने की ज़रूरत है। बिना सोचे किया हुआ है, इसलिए सहन करना पड़ता है। सोचोगे तो समझ में आ जाएगा कि इसमें भूल कहाँ हो रही है। उससे सब समाधान हो जाएगा। भीतर अनंत शक्ति है, आप माँगो वह शक्ति

मिल जाए ऐसा है। यह तो भीतर शक्ति नहीं ढूँढता और बाहर ढूँढता है। बाहर कौन सी शक्ति है?

सहन करने से ही घर-घर में विस्फोट होते हैं। मन में ऐसे ही मानते हैं कि 'मैं कितना सहन करता हूँ।' जबकि सोचकर रास्ता निकालना चाहिए, जो संयोग आए है, वे संयोग कुदरत का निर्माण हैं, उनसे अब कैसे भाग सकता है? नये बैर बंधे नहीं और पुराने बैर छोड़ देने हों तो, उसका रास्ता निकालना चाहिए। यह जन्म बैर छोड़ने के लिए है। और बैर छोड़ने का रास्ता है, हर एक के साथ समभाव से *निकाल* करना! फिर देखो, तुम्हारे बच्चे कितने संस्कारी होंगे! यानी मैं क्या कहता हूँ कि सहन करने के बजाय समझो। समझोगे तो सारा निबेड़ा आ जाएगा। यह पज़ल (पहली) सोल्व हो पाए ऐसा है। यह मैं सोल्व करके बैठा हूँ और आपको सोल्व करना दिखला दूँगा।

संयोग हैं वियोगी स्वभाव के

संयोग दुःखदाई हैं और संयोग आपने शादी करके खड़े किए हैं। और फिर ये संयोग वियोगी स्वभाव के हैं। उनका स्वभाव ही वियोगी है। इन्हें यदि निकाल देना हो तो आपको उसका रिएक्शन आएगा। क्योंकि वे बैर बाँधेंगे। यह संयोग तो अपने आप ही चला जाएगा। भगवान ने कहा है, 'तू घबराना मत, जो संयोग मिलें हैं, समय आने पर वे अपने आप ही उठकर चले जाएँगे! तू स्थिरता रखना। ज्ञान में स्थिर रहना।'

संयोग कर्ताभाव से बने हैं। हाँ। अतः वियोगी स्वभाव के हैं। ऐसा लोगों को अच्छा नहीं लगता इसलिए कहते हैं 'यह जो सुख आया था, वह पूरा चला गया।' तब मैंने कहा, 'क्या आया है?' तब कहते हैं, 'यह दुःख आया है।' वह (सुख) चला गया। तो फिर यह (दुःख) भी चला जाएगा, भाई। छोड़ ना, संयोग वियोगी स्वभाव के हैं।

यह सब कायम रहता होगा? संयोग खुद ही वियोगी स्वभाव के हैं। वे अगर वियोगी स्वभाव के न होते न, तो इस संसार में किसी का मोक्ष ही नहीं हो पाता!

सार निकालने के लिए हैं, ये संयोग

जगत् में संयोग सार निकालने के लिए हैं, एक्सपीरियेन्स (अनुभव) करने के लिए है, किन्तु लोग विषम परिस्थिति में फँस गए हैं। शादी करके ढूँढते हैं कि सुख किसमें है? पत्नी में है? बच्चे में है? ससुर में है? सास में है? किसमें सुख है, उसका सार निकाल न! लोगों को द्वेष होता है, तिरस्कार होता है किन्तु सार नहीं निकालते हैं। इस संसार के रिश्ते रिलेटिव संबंध हैं, रियल नहीं हैं। सिर्फ सार निकालने के लिए हैं रिश्ते! सार निकालनेवाले लोगों में राग-द्वेष कम होते हैं और वह मोक्ष मार्ग का आविष्कारक बनता है।

चीकणी फाइल ले जाती है मोक्ष के पथ पर

मोक्ष में जाने के लिए अधिक से अधिक उपकारी कौन है? तो वह हैं, *चीकणी फाइल*। और फीकी फाइल आपको निकलने नहीं देगी। फीकी यानी जो मीठी लगती है न, वह आपको मोक्ष में जाने में मदद नहीं करती। आपको जाना हो तो जाओ, वर्ना कुछ नहीं। वर्ना फिर नाश्ता करो आराम से, इसलिए मैंने तो जमा किया था।

आप यदि सोचकर देखोगे तो आपको पता चलेगा कि *चीकणी फाइलें* हमें मदद करती हैं। यदि ज्ञान नहीं मिला हो तो आपका दिमाग़ खराब करके उल्टे रास्ते ले जाए, नीचे अधोगति में ले जाए। लेकिन यदि ज्ञान प्राप्त हुआ है इसलिए उपकारी है।

जो प्राप्त हुआ, उसका *निकाल* करो

यह तो जब से शादी हुई, तभी से अभिप्राय

उत्पन्न हो गया, प्रिज्युडिस (पूर्वाग्रह) उत्पन्न हो गया कि 'ये ऐसे हैं, वैसे हैं।' उससे पहले कुछ था? अब तो आपको मन में नक्की करना है कि 'जो है, सो यही है' और आप खुद पसंद करके लाए हो। क्या अब पति बदला जा सकता है?

इसलिए अब निकाल कर देना है। आप इन्डियन हैं। कितने पति बदलोगी? यही एक पति मिला...जो मिला वही सही। कैसे भी निबाह लेना है! और पुरुषों के लिए, कैसी भी स्त्री मिली हो, कलह करे, फिर भी उसके साथ निकाल कर लेना अच्छा है। वह तो बाहर शोर मचाए या मुँह पर गालियाँ दे, लेकिन रेडियो ही है। आपको तो ऐसा ही लगता है कि यह सब वास्तव में वही कर रही है। फिर उसे भी पछतावा होता है कि 'अरे, मुझे नहीं कहना चाहिए था लेकिन मुँह से निकल गया।' तब तो फिर वह करती है या रेडियो करता है? अब यदि पहाड़ पर से इतना पत्थर गिरे तो किस पर चिढ़ोगे? और यह यदि एक कंकड़ भी मारे तो?

कोई पूछें कि कैसा है आपका घर-संसार? तो आपको भी 'अच्छा है', ऐसा कहना है। 'ठीक' भी नहीं कहना, 'बहुत अच्छा है' कहना। सभी घरों में मिट्टी के चूल्हे होते हैं। फिर वहाँ पर मुँह बिगड़ जाता है। यह तो कम-ज्यादा हो सकता है सब। तुझे कैसा लगा?

प्रश्नकर्ता : ठीक ही है, बात सही है।

एक फाड़े, वहाँ दूसरे को जोड़ना है

आत्मा किसी का पति, स्त्री या पुरुष या किसी का बेटा नहीं बन सकता है, सिर्फ ये सभी कर्म हो रहे हैं! आत्मा में तो कुछ भी परिवर्तन नहीं होता है। आत्मा तो आत्मा ही है, परमात्मा ही है। यह तो आप मान बैठे हो कि 'यह मेरी स्त्री है!'

स्त्री के साथ रियल संबंध होता होगा? इस

देह के साथ ही रियल संबंध नहीं है न, तो फिर देह के पहचानवाले के साथ कैसे रियल संबंध हो सकता है? अर्थात् ये सारे संबंध रिलेटिव संबंध है। रिलेटिव का क्या अर्थ है कि आपको अगर उसकी जरूरत हो, तो वह फाड़ने बैठी हो तो भी आपको पूरी रात जोड़ते रहना है। आप भी फाड़ो और वह भी फाड़े तो सवरे क्या हो जाएगा?

प्रश्नकर्ता : डाइवोर्स।

दादाश्री : अतः वह फाड़ती रहे और आप पूरी रात जोड़ते रहो। वरना फिर सुबह में कोई भी संबंध नहीं रहेगा। रिलेटिव का अर्थ क्या है कि 'जोड़ो।' एक फाड़े तो दूसरे को जोड़ना है। यानी दोनों सँभालें। तब कहता है कि 'मुझे किस तरह से जोड़ना है?' मैंने कहा कि यदि वह पूरी रात तेरे लिए बहुत सोचे कि 'बहुत बुरे हैं, बहुत बुरे हैं' तो तू पूरी रात ऐसा कहना कि 'वह अच्छी है, बहुत अच्छी है। यह तो मुझ से भूल हो जाती है, वह तो बहुत अच्छी है।' तो फिर सुबह में जुड़ जाएगा। यह रिलेटिव संबंध है, पुराने हिसाब पूरे करने के लिए संबंध है, वह हिसाब चुकता हो गया कि अलग हो जाएँगे। फिर से कभी नहीं मिलेगी। उन्हें सुधारने की झंझट क्यों करें? आप उसे सुधारना तय करना, लेकिन यदि न सुधरे तो आपको आपकी मर्यादा में रहना है। संसार बिगड़ने से रोकना है, सुधारने के लिए हठ करे, तो हठ करने से बिगड़ जाएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बिगड़ जाएगा न।

दादाश्री : सुधारने के लिए नहीं है किन्तु यह जो हो रहा है, उसे करेक्ट (सही) मानकर आगे चलना है। सुधारने की झंझट में नहीं पड़ना है। सुधारने की भावना रखनी है, किन्तु सुधारने से क्या होगा, ज्यादा बिगड़ जाता है। आपको तो वह तोड़ती रहे-फाड़ती रहे उसे जोड़ना है। यह तो रिलेटिव

संबंध है। ज़रूरत हो तो ऐसा करना और यदि ज़रूरत नहीं हो तो वह भी फाड़े और आप भी फाड़ोगे तो अलग। समझ में आए ऐसी बात है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आए ऐसी बात है।

समझने से आता है निबेड़ा

संसार भोगे बगैर चारा ही नहीं है, वह डिस्वार्ज है। भगवान महावीर को भी तीस साल तक संसार था। संसार बाधक नहीं है, आपकी नासमझ बाधक है। ज्ञानी से ज्ञान प्राप्त करने के बाद शेष क्या बचा? तो वह है आपकी नासमझी।

प्रश्नकर्ता : उसी को निकालना मुश्किल है।

दादाश्री : नहीं, एक ही बार समझ लेने से नासमझी का हमेशा के लिए निबेड़ा आ जाएगा। दुनिया में मुश्किल जैसी कोई चीज़ है ही नहीं न! कोई चीज़ मुश्किल नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : वह मुश्किल है, वैसा सोचने से मुश्किल बढ़ जाती है न?

दादाश्री : बढ़ ही जाएगी न! फिर मुश्किलों की परंपरा शुरू हो जाती है। जैसा बोले, जैसा चिंतन करे तुरंत ही वैसा हो जाता है। यह जो उसका स्वभाव है, और यह ज्ञान देने के बाद तो फिर बचा ही क्या? कुछ भी नहीं बचता।

अब तो बस मुक्ति की इच्छा

प्रश्नकर्ता : अब यह समझने के बाद मुक्ति की इच्छा होती है।

दादाश्री : तब फिर और क्या इच्छा रहेगी? तरबूजे को देखकर क्या करना है? कितना अच्छा है उसका पति! और ऊपर से पति कहेगा कि कितनी सुंदर है उसकी पत्नी? फिर बाद में उससे पूछना कि आपको बहुत सुंदर लगती है न? यदि एक बार जल

गई हो। पूरा शरीर, इतना हाथ-पैर जल गया हो, चमड़ी निकल जाए, और पस निकले, उस समय यदि वह कहे कि हाथ धुलवाइए, तब आप क्या करोगे? नहीं धुलवाएँगे। नहीं धुलवाओगे। तब कितनी सुंदर थी! तो अब हाथ फिरा न? इसका क्या करना है? यह तो रेशमी चादर में बंधा हुआ मांस है और हड्डियाँ है!

अतः यदि इस जनम में स्त्री पसंद नहीं हो तो इसी जन्म में भाव से निश्चय करो, कि अब (अगले जन्म में) शादी ही नहीं करनी है और विवाह भी नहीं करना है। ऐसे भाव करोगे तो फिर उसका परिणाम अगले जन्म में मिलेगा। इस जनम में तो पिछले जन्म का परिणाम भुगते बिना चारा ही नहीं है।

शुद्धात्मा देखकर निबटा देनी है फाइल

प्रश्नकर्ता : फाइलें ज्यादा हों तो कब वे निबट गईं, ऐसा कहा जाएगा?

दादाश्री : निबटारा तो, आपने उसका शुद्धात्मा देखा न, तो अपने आप ही निबटारा हो जाएगा। वर्ना फिर यह तो मेरे देवर का बेटा और यह मेरी देवरानी का बेटा वगैरह ऐसा करने जाएँ तो फिर उल्टा चिपटेगा सबकुछ। सीने से चिपटेंगे सभी। सँभल-सँभलकर, 'उनका अच्छा हो,' ऐसा कहना। किन्तु सीने से लगाने जैसा है इस जगत् में? खुद के बच्चे को भी सीने से नहीं लगाना चाहिए।

यह (रिलेटिव संबंध) तो नाटक है। नाटक में पत्नी-बच्चों को हमेशा के लिए अपना बना लें तो वह थोड़े ही चल सकता है? हाँ, नाटक में जैसा बोलते हैं, वैसा बोलने में हर्ज नहीं है कि 'यह मेरा बड़ा बेटा, शतायु।' किन्तु सब ऊपरी, नाटकीय। इन सभी को सचमुच का माना उसी के प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। यदि सचमुच का नहीं माना होता तो प्रतिक्रमण नहीं करने पड़ते। जहाँ सत्य माना वहाँ राग-द्वेष शुरू हो जाते हैं और प्रतिक्रमण से ही मोक्ष है।

विनाशी संबंधों में मोह किसलिए?

पूरा संसार छल-कपट है। अगर थोड़ा सा भी अपना होता तो यह 'दादा' आपको नहीं कहते कि इतना संबंध सच्चा है? किन्तु यह तो संपूर्ण दगा ही है। कभी भी सगा नहीं हुआ। जीवित लट्टू, चैन नहीं लेने देते हैं। अरे, यहाँ सत्संग में आना हो, सिर्फ दर्शन करने आना हो तो भी नहीं आने देते। आपको यहाँ आने देते हैं वह तो बहुत अच्छा कहलाता है।

यह मोह किस पर? झूठे सोने पर? खरा हो तो मोह रख सकते हैं। यह तो ग्राहक-व्यापारी जैसा संबंध है। माल अच्छा मिले तभी ग्राहक पैसा देता है, ऐसा है यह संबंध। यदि एक ही घंटा पति के साथ झगड़ा करो तो संबंध टूट जाएगा। ऐसे संबंधों का मोह क्या रखना?

ममता रखो, किन्तु नाटकीय

प्रश्नकर्ता : हमारे पत्नी-बच्चे हैं, अब उन पर तो हमें व्यवहारिक ममता रखनी पड़ेगी न? वे ममता रखते हैं, तो हमें भी रखनी पड़ेगी न?

दादाश्री : ममता रखते नहीं हैं न, वह तो अपने आप रहती ही है। ममता निकालनी है। ममता तो रहती ही है। कुत्ते में भी ममता रहती है न! किन्तु वह भी जब तक पिल्ले छोटे हों तभी तक, फिर बड़े हो जाएँ तब नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : ऐसा सब नाटकीय रखना है, ड्रामेटिक रखना है?

दादाश्री : सब ड्रामेटिक। (यह मुझे) साठ हजार लोगों के साथ, सभी के साथ ममता है न, किन्तु वह कैसी? मेरापन रहता है, ममता रहती है लेकिन नाटकीय!

यह जगत् ड्रामा ही है। वर्ल्ड इज दी ड्रामा

इटसेल्फ (जगत् स्वयं नाटक है)! यह जो ड्रामा तैयार हो चुका है। जो ड्रामा कर रहे हैं, वहाँ ममता रखते हैं, 'यह मेरा और यह तेरा!' इस तरह 'मेरा है' बोलने में हर्ज नहीं है, किन्तु ड्रामेटिक बोलना है। शादी करो, वह भी ड्रामेटिक। किन्तु ये तो दरअसल शादी रचाते हैं। इसीलिए फिर विधवा होना पड़ता है न! और फिर विलाप करना पड़ता है! अर्थात् दरअसल करना कुछ भी नहीं है। सबकुछ ड्रामा ही है।

मैं पूरे दिन ड्रामा ही करता रहता हूँ न! ड्रामा यानी क्या? 'मैं' देखनेवाला रहता हूँ, 'मैं' इसमें अलग रहता हूँ। स्टेज के ड्रामा में क्या होता है? भर्तुहरी का किरदार निभाता है, किन्तु आप उस समय पूछें कि, 'तू कौन है, ऐसा याद था?' तब कहेगा, 'मैं लक्ष्मीचंद हूँ, ऐसा तो भूलता ही नहीं न और मुझे खिचड़ी खानी है वह भी नहीं भूलता।' खिचड़ी खाना लक्ष्य में रहता है या नहीं? इस तरह से ड्रामेटिक रहना है।

ऐसे खुलेंगी 'मेरे' की लपेटें

शादी से पहले पति के प्रति ममता थी क्या? नहीं। तो ममता कब से बंधी? शादी के समय मंडप में आमने सामने बैठे, तब तूने नक्की किया कि 'ये आए मेरे पति। थोड़े मोटे और साँवले हैं।' और फिर उन्होंने भी नक्की किया कि 'यह मेरी पत्नी आई।' तब से 'मेरी-मेरा' की जो लपेटें लगाई, वे लपेटें लगती ही रहीं हैं। यह जो पंद्रह साल की फिल्म है, उसे तुम 'नहीं है मेरे, नहीं हैं मेरे' करोगी, तब वे लपेटें खुलेंगी और ममता छूटेगी।

'नहीं है मेरा' कहा कि अलग

चाय-पानी करना, नाश्ता करना, सब लोगों को बुलाना, घर को रंगवाना, सबकुछ करना लेकिन अगर यह मकान जलने लगे तो कोने में बैठकर पाँच हजार बार बोल देना, 'नहीं है मेरा, नहीं है मेरा' कि हो गया अलग!

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : 'नहीं है मेरा, नहीं है मेरा', किन्तु यदि पति 'मेरी, मेरी' करे, वहाँ क्या होगा?

दादाश्री : फिर भी जो 'नहीं है मेरा,' कहे तो उसके लिए अलग ही है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि वाइफ ऐसा कहे कि 'नहीं है मेरा, नहीं है मेरा', मैं कहूँ कि 'मेरी, मेरी', तो अब क्या होगा?

दादाश्री : फिर भी 'नहीं है मेरा' वाला जीतेगा, 'मेरी' वाला नहीं जीतेगा। 'नहीं है मेरा' वाला जीतेगा। साथ में बैठे तो ममता खड़ी हो जाएगी और दूर हो गए तो ममता गायब हो जाती है। वह कुछ समय बाहर रहे तो फिर ममता छूट जाती है फिर। ऐसे करते-करते (मेरा-मेरी का) सारा अध्यास उड़ जाता है।

'मेरी' की मान्यता गलत

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा कहना आसान है, मगर मानना मुश्किल है।

दादाश्री : क्या मानना मुश्किल है?

प्रश्नकर्ता : 'नहीं है मेरी', ऐसा।

दादाश्री : जो जाने वह बोले! जो जानता है उसे बोलने में क्या हर्ज है? वर्ना तो झगड़े होने के बाद 'नहीं है मेरा', 'नहीं है मेरी' होकर अलग हो जाते हैं। अपने आप ही 'नहीं है मेरी' होता रहता है। इसके बजाय अगर आप झगड़ा हुए बगैर 'नहीं है मेरी' कहो तो? मुश्किल कुछ है ही नहीं। मुश्किल तो, पत्नी के मरने के बाद थककर ऐसा करना पड़ेगा या नहीं करना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : जो अनुभव के आधार पर बंधे हैं, वे कैसे छूट सकते हैं?

दादाश्री : वे भी, यह 'मेरी' की जो मान्यता थी, वह गलत थी, 'गलत मान्यता थी', ऐसा करके

छूट जाते हैं। 'मेरी यह मान्यता सही है' कहा तो बढ़ती जाती है। ओन्ली रोंग बिलीफ (सिर्फ उल्टी मान्यता) है यह सारी!

आसक्ति जाती है, प्रेमभाव नहीं

प्रश्नकर्ता : यदि हम इन सभी फाइलों का 'नहीं है मेरी, नहीं है मेरी' करके निकाल कर डालें, तो प्रेमभाव का क्या होगा?

दादाश्री : ओहो.... 'नहीं है मेरी' कहने से प्रेमभाव खत्म नहीं हो जाएगा, बल्कि आसक्ति खत्म हो जाएगी। लेकिन यह प्रेमभाव होता ही नहीं न।

मुझ में भी प्रेम है या नहीं? या आप अकेले ही प्रेमवाले हो?

हीरा बा ७३ साल के हैं फिर भी मुझ से कहते हैं, 'आप जल्दी आना।' मैंने कहा, 'मुझे भी आपके बगैर अच्छा नहीं लगता!' ऐसा ड्रामा करें तो उन्हें कितना आनंद हो जाता है। 'जल्दी आना, जल्दी आना' कहते हैं। तो उन्हें भाव है इसलिए वे कहते हैं न! अतः हम भी ऐसा कहते हैं। बोली हितकारी होनी चाहिए। बोला हुआ बोल यदि सामनेवाले को हितकारी नहीं हो गया तो फिर आपका बोला हुआ बोल किस काम का?

पत्नी-बच्चों पर प्रेम तो रहता ही है न, अभी तो? वहाँ से प्रेम कब निकाल दोगे? मैंने तो कितने ही सालों से निकाल डाला है।

आसक्ति की संकुचितता, प्रेम की विशालता

ऐसा आपने आपका प्रेम संकुचित कर दिया है 'यह वाइफ और बच्चे तक।' जबकि मेरा प्रेम तो विस्तृत है।

प्रश्नकर्ता : प्रेम क्या इतना संकुचित हो सकता है कि एक ही पात्र तक सीमित रहे?

दादावाणी

दादाश्री : नहीं, प्रेम यानी संकुचित होता ही नहीं, वह प्रेम है। संकुचित हो गया तो, वह आसक्ति हो जाती है। यदि संकुचित होगा न कि इतने 'एरिया' (हृद) तक ही, तब तो वह आसक्ति कहलाएगी। ऐसा संकुचित कैसे होता है? चार भाई हों और चारों के तीन-तीन बच्चे हों और इकट्ठे रहते हों, तो तब तक घर में सभी लोग 'हमारा' बोलेंगे। 'हमारे प्याले फूटे', सभी ऐसे बोलेंगे। लेकिन चारों जब अलग हो जाते हैं उसके दूसरे दिन, आज बुधवार के दिन अलग हुए तो गुरुवार के दिन से ही वे अलग बोलेंगे। 'वह आपका और यह हमारा।' ऐसी संकुचितता आ जाती है। यानी पूरे घर में जो विशाल प्रेम था, वह अब अलग होने से संकुचित हो गया। फिर पूरे मुहल्ले की तरह, युवक मंडल की तरह करना हो तो उनका प्रेम फिर सामूहिक होगा। बाकी जहाँ प्रेम होता है वहाँ संकुचितता नहीं होती, विशालता होती है।

मोहवाला प्रेम, कमजोर

मोहवाला प्रेम तो बेकार होता है न सारा। तो फिर ऐसे प्रेम में मत फँसना। प्रेम परिभाषासहित होना चाहिए। बगैर प्रेम के इन्सान जी ही नहीं सकता। यह बात सच है, किन्तु प्रेम परिभाषा सहित होना चाहिए। चढ़े-उतरे नहीं उसका नाम प्रेम। कहीं पर कम-ज्यादा होता है क्या? उसकी जाँच कर लेना। हमारा प्रेम बढ़ता नहीं, घटता नहीं, क्योंकि उसमें आसक्ति नहीं है, उसी को प्रेम कहते हैं। ऐसा भगवान का प्रेम था। ऐसे प्रेम से जीया जा सकता है। ऐसा प्रेम हो तो 'बिना खाए' रह सकते हैं। प्रेम की परिभाषा आपको पता चली? ऐसा प्रेम ढूँढो। अब ऐसा (मोहवाला) प्रेम मत ढूँढना कि कल सुबह वह 'डाइवोर्स' ले ले। इनका क्या ठिकाना?

पति देखता है कि इनके पास इतनी सारी साड़ियाँ हैं फिर पत्नी भी लेने जा रही है, यानी यह

मोह है। साड़ी नहीं हो और लेने जाए तो ठीक है। यानी यह सारा मोह ही है न! मोह यानी खुला छल-कपट। मोह तो हंड्रेड परसेन्ट धोखे निकले हैं।

प्रश्नकर्ता : व्यक्ति को सच्चा प्रेम है या उसका मोह है, ऐसा उसे खुद को कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : वह तो डाँटने पर अपने आप पता चल जाएगा। एक दिन डाँटे और वह चिढ़ जाए तो समझना कि यह यूज़लेस है। फिर क्या दशा होगी? अभी तो निरे स्वार्थ ही स्वार्थ! स्वार्थ के लिए भी कोई प्रेम दर्शाता है।

प्रश्नकर्ता : सच्चा प्रेम हो वहाँ डाँटे फिर भी कैसा रहता है?

दादाश्री : वह डाँटे तो भी खुद शांत रहकर उसे नुकसान न हो, ऐसा करता है। जहाँ सच्चा प्रेम हो वहाँ डाँट को गले उतार लेते हैं।

जहाँ प्रेम है, वहाँ नहीं दिखती नोंध

आपका वाइफ से मतभेद होता था, उस समय राग होता था या द्वेष?

प्रश्नकर्ता : वह तो बारी-बारी से दोनों होता है, हमें 'स्युटेबल' (अनुकूल) हो तो राग होता है और 'ओपोझिट' (प्रतिकूल) हो तो द्वेष होता है।

दादाश्री : यानी ये सब राग-द्वेष के आधीन है। अभिप्राय एकाकार नहीं होते हैं न!

प्रश्नकर्ता : ये पति-पत्नी का ऐसा ही होता है न? 'मैं तुझे चाहता हूँ, मैं तुझे प्रेम करता हूँ' कहते हैं, किन्तु फिर वापस झगड़ते हैं।

दादाश्री : इसी का नाम आसक्ति! ठीठ, ठिकाना ही नहीं। बड़े आए चाहनेवाले! सच्चा चाहनेवाला तो मरते दम तक हाथ नहीं छोड़ता। और कुछ भी हो जाए तो उसकी नोंध (अत्यंत राग या

द्वेष सहित लंबे समय तक याद रखना) नहीं लेता। जहाँ प्रेम है वहाँ नोंध होती ही नहीं। नोंधबही रखो और प्रेम रखो, ये दोनों बातें साथ में नहीं हो सकतीं। नोंधबही रखे कि 'ऐसा किया और वैसा किया' तो वहाँ पर प्रेम नहीं है।

प्रेम में दोष दिखते ही नहीं। जबकि इन लोगों को तो कितने दोष दिखते हैं। 'तुम ऐसी और तुम वैसी' अरे, प्रेम कह रहा था न? कहाँ गया प्रेम? यानी प्रेम नहीं है। संसार में भला प्रेम होता होगा? बाल बराबर प्रेम भी जगत् ने देखा नहीं है, यह तो आसक्ति है।

और जहाँ आसक्ति होती है वहाँ आक्षेप लगाए बगैर रहेंगे ही नहीं। वह आसक्ति का स्वभाव है। जब आसक्ति हो तब आक्षेप लगते ही रहते हैं न कि 'आप ऐसे हो और आप जैसे हो? आप ऐसे और तुम वैसी' ऐसा नहीं बोलते, नहीं? आपके शहर में बोलते हैं या नहीं बोलते? बोलते हैं तो वह आसक्ति की वजह से है।

प्रश्नकर्ता : इसमें जरा प्रेम और आसक्ति का भेद समझाइए।

दादाश्री : जो विकृत प्रेम है, उसी का नाम आसक्ति। इस संसार में आप जिसे प्रेम कहते हैं, वह विकृत प्रेम कहलाता है और उसे आसक्ति ही कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : प्रेम और मोह, उसमें मोह में न्योच्छावर होने में बदले की आशा है और यहाँ प्रेम में बदले की आशा नहीं है। प्रेम में यदि न्योच्छावर हो जाए तो पूर्णपद को प्राप्त कर ले?

दादाश्री : इस दुनिया में कोई भी इन्सान यदि सत्य प्रेम की शुरूआत करे तो वह भगवान बन जाए। सत्य प्रेम शुद्ध होता है। ऐसे सत्य प्रेम में विषय नहीं होता, लोभ नहीं होता, मान नहीं होता। ऐसा शुद्ध

प्रेम भगवान बनाता है, संपूर्ण बनाता है। रास्ते तो सभी आसान है किन्तु ऐसा होना मुश्किल है न?

व्यवहार पूरे करो, सुपरफ्लुअस रहकर

आप खुद शुद्धात्मा और ये सभी व्यवहार ऊपर-ऊपर से अर्थात् 'सुपरफ्लुअस' करने हैं। खुद को 'होम डिपार्टमेंट' (आत्मा) में रहना और 'फॉरिन' (अनात्मा विभाग) में 'सुपरफ्लुअस' रहना। 'सुपरफ्लुअस' यानी वृत्ति तन्मयाकार न रहे। सिर्फ 'ड्रामेटिक'। सिर्फ 'ड्रामा' ही करना है। 'ड्रामे' में नुकसान हो जाए, तो भी हँसना है और मुनाफा हो तो भी हँसना है। 'ड्रामे' में अभिनय भी करना पड़ता है, नुकसान हो तो वैसा अभिनय करना पड़ता है, मुँह से कहना कि भारी नुकसान हो गया, किन्तु भीतर तन्मयाकार मत होना।

ऐसा विज्ञान, जो तमाम झगड़ें मिटाए

कितने रूम चाहिए वगैरह वह सब खुद लिखकर लाया है। उतना ही उसे मिला है। अब औरों का देखकर उसका लोभ जगता है और उसी का नाम ही इन्वाइटेड (बुलाया हुआ) दुःख। औरों का देखकर दुःख है यह। किसी के पति को अच्छा क्यों देखें कि जिससे अपना बुरा दिखे?

दुनिया में जैसा है वैसा, समझ में नहीं आने से ये झगड़े हैं। जैसा है वैसा जान लें, तो फिर झगड़े होंगे ही नहीं। इसलिए भ्रांति कहा न कि अरे भाई, बगैर काम के क्यों मार खाते हो!

विज्ञान तो देखो! संसार के साथ झगड़े ही बंद हो जाते हैं। पत्नी के साथ तो झगड़े नहीं, किन्तु सारे संसार के साथ झगड़े बंद हो जाते हैं। यह विज्ञान ही ऐसा है और झगड़े बंद हो जाएँ तो मुक्त हो जाएँ।

फाइलों का समभाव से निकाल करना वही सबसे बड़ा होम-हवन और यज्ञ है।

जय सच्चिदानंद

“विषय में निडरता वही विष”

सभी शास्त्रों ने जोर देकर कहा है कि विषय वे विष हैं। विष कैसे हैं? विषय कहीं विष होता होगा? विषय में निडरता, वही विष है। विषय यदि विष होता न, तो फिर आप सभी घर पर रह रहे होते और आपको मोक्ष में जाना होता तो मुझे आपको हाँककर भेजना पड़ता कि जाओ उपाश्रय में, यहाँ घर पर मत पड़े रहो। ऐसे हाँककर भेजना पड़ता या नहीं भेजना पड़ता? लेकिन क्या मुझे किसी को हाँकना पड़ता है? हम तो कहते हैं कि जाओ, घर जाकर आराम से पलंग पर सो जाओ।

विषयरहित ब्रह्मचारी कितने होंगे इस दुनिया में? यानी पाँच-दस हजार होंगे, शायद बीस-पच्चीस हजार होंगे, लेकिन फिर भी ये साढ़े चार अरब लोग तो विष पीया ही करते हैं। विषय को विष रूपी लिखा है, उससे मनुष्य के मन पर क्या असर होगा? ‘विषय विष हैं’ ये शब्द शादीशुदा लोगों के सुनने में आए, तो क्या होगा? शादीशुदा लोगों के सामने यह शब्द बोलना ही नहीं चाहिए और जो ऐसा शब्द बोले तो उससे कहें कि ‘अरे, ऐसे यदि विषय ही विष होता तो शादी की ज़रूरत ही क्या थी? ये तो कुछ ही लोग बिना शादी किए घूमते रहते हैं। बाकी का, सारा जगत् तो विवाहित ही हैं। अतः यदि गलत होता तो सारा जगत् शादी करता ही क्यों?’ ये जो शादी किए बिना घूमते रहते हैं, वे तो व्यायामशाला में गए हैं कि स्त्री के बिना जीया जा सकता है या नहीं? यानी वह तो व्यायामशाला है। बाकी आपको ‘टेस्ट एक्जामिनेशन’ में से गुज़रना पड़ेगा, और यहाँ पर स्त्री के साथ, पत्नी-बच्चों के साथ ही वीतराग होना पड़ेगा। भागकर वहाँ हिमालय पर जाकर, वीतराग होकर (!) ‘हमकु क्या, हमकु क्या’ ऐसे करता रहा, तो वह नहीं चलेगा।

स्त्री डाँटे और रात उसी घर में गुज़ारनी पड़े, वह तो सबसे बड़ा टेस्ट एक्जामिनेशन है! यानी स्त्री के साथ रहते हुए भी मोक्ष होना चाहिए। स्त्री की गालियाँ खाए फिर भी समता रहे, ऐसा मोक्ष होना चाहिए। स्त्री मोक्ष में बाधा नहीं डालती। आपकी गलती से मोक्ष रुकता है। गलती आपकी है, स्त्री की गलती नहीं है। स्त्री बाधक नहीं है, आपकी अज्ञानता बाधक है।

बीवी-बच्चों के साथ रहते हुए भी मोक्ष हो, वह रास्ता हमने दिखाया है। अभी यहाँ से सीधा मोक्ष नहीं है। यह एकावतारी पद है। वीतरागों की बात बिल्कुल सही है कि यदि सीधे ही मोक्ष में जा पाते तो बीवी-बच्चों को इस अंतिम जन्म में छोड़ना पड़ता, लेकिन यह तो एकावतारी पद है। मोक्ष का और संसार का क्या लेना-देना? एक भी कर्म नहीं बँधेगा, उसकी हम गारन्टी देते हैं। स्त्री-बच्चों के साथ रहते हुए भी कर्म नहीं बँधेगा।

भगवान ने आत्मा के दो भेद बताए; एक संसारी और दूसरे सिद्ध। जो मोक्ष में चले गए हैं, वे सिद्ध कहलाते हैं और बाकी के सभी संसारी। अतः यदि आप त्यागी हो, फिर भी संसारी हो और ये गृहस्थ भी संसारी हैं। इसलिए आप मन में कुछ रखना मत। संसार बाधक नहीं है, विषय बाधक नहीं है, कुछ भी बाधक नहीं है, अज्ञान बाधक है। इसीलिए तो मैंने पुस्तक में लिखा है कि विषय विष नहीं हैं, विषय में निडरता, वह विष है। अब मुझे कुछ भी बाधक नहीं है, ऐसा होना, वही विष है। अतः विषयों में निडरता, वह विष है।

(परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन – सत्संग हाइलाईट्स

१८-२३ जुलाई : अमेरिका के साउथ-इस्ट क्षेत्र के जेक्सनविल शहर में पहली बार गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया गया। शिविर में 'दान' पुस्तक पर सत्संग-पारायण हुआ। बाधा डालने से अंतराय, ज्ञान को समझना है या करना है? जैसे विषयों पर विशेष सत्संग हुआ। पूज्यश्री द्वारा श्री सीमंधर स्वामी की १७० छोटी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हुई। ३५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिसमें कई विदेशी थे। लिटल एम.एच.टी. के बच्चों के लिए 'आनंद बाजार' फन फेर रखा गया। युवकों के लिए नई वेबसाइट youth.dadabagwan.org का ओपनिंग हुआ। गुरुपूर्णिमा के दिन पूज्यश्री ने नमस्कार विधि के बाद जगत् कल्याण की भावना करवाई। बाद में पूज्यश्री ने सीमंधर स्वामी तथा दादा भगवान का पूजन किया और आरती-स्तुति-राजीपा गाए गए। सभी महात्माओं ने पूज्यश्री के दर्शन किए। अगले साल गुरुपूर्णिमा अमेरिका के नोर्थ-सेन्ट्रल क्षेत्र के सेन्ट लुइस शहर में मनाई जाएगी, ऐसी घोषणा पूज्यश्री ने की। महोत्सव दौरान लगभग २५०० महात्माओं उपस्थित थे।

२४-२५ जुलाई : अमेरिका के साउथ-इस्ट क्षेत्र के लगभग ३०० सेवार्थियों तथा नियमित सत्संग में आनेवाले महात्माओं के लिए डायटोना बीच पर दो दिन की रिट्रीट (शिविर) रखी गई। रिट्रीट में सत्संग, बीच वॉक, एटलान्टिक के समुद्र में स्नान, गरबा और पूज्यश्री दर्शन का आयोजन हुआ।

३०-३१ जुलाई : केन्या के मोम्बासा शहर में दो साल बाद सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम रखा गया, जिसमें १२० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया तथा पहले ज्ञान लिए हुए महात्माओं भी उपस्थित थे। पूज्यश्री जहाँ रुके थे, वहाँ काम करनेवाले स्थानीय लोग भी उनसे प्रभावित होकर दर्शन के लिए आएँ और साथ में फोटो सेशन का भी आनंद उठाया। पूज्यश्री के पुनः आगमन से मोम्बासा शहर में आनंद का माहोल खड़ा हो गया था। भारत तथा अन्य देशों में से आएँ हुए महात्मा मोम्बासा से नैरोबी पूज्यश्री के साथ 'अक्रम फ्लाइट' (केवल महात्माओं का) में गए।

२-४ अगस्त : केन्या की राजधानी नैरोबी में तीन दिन की शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 'दान' पुस्तक पर पारायण, जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग तथा 'कर्तापन का भोगवटा' विषय पर सत्संग हुआ। १०५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया तथा १५ मुमुक्षुओं ने व्यसनमुक्ति के लिए विधि करवाई। शिविर में बच्चों के लिए स्पेशल 'फन डे' का भी आयोजन हुआ। ऐसा ही फन डे एक महीने पहले भी हुआ था, जिसमें १५०० स्थानिक बच्चों तथा युवकों ने भाग लिया था। रमत, पपेट, एनिमेशन प्रदर्शन द्वारा बच्चों को दादा का ज्ञान समझाया गया।

५-७ अगस्त : पूज्यश्री के संग भारत, अफ्रिका, यु.के., यु.एस.ए. तथा सिंगापोर से आए हुए ८० महात्माओं प्रख्यात मसाइमारा नेशनल पार्क (केन्यन सफारी) की मुलाकात लीं। यहाँ महात्माओं ने पूज्यश्री संग सिंह, चीता, जेब्रा, हिपोपॉटैमस, हाथी, जिराफ और अन्य कई जानवरों को सहज दशा में देखा और आनंद के पल व्यतीत किए।

८-९ अगस्त : केन्या के केरीचो शहर में पहली बार आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में ९० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जबकि वहाँ भारतीय लोगों की संख्या बहुत ही कम थी। पूज्यश्री का एरपोर्ट तथा गुरुद्वारा में, जहाँ वे रुके थे, वहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया। केरीचो शहर के जो चाय के बगीचे प्रख्यात हैं, वहाँ पूज्यश्री के साथ महात्माओं ने इन्फॉर्मल सत्संग का आनंद उठाया। पुराने महात्माओं तथा युवकों में सत्संग, सेवा और आतिथ्य का उत्साह बहुत ही देखने को मिला।

१०-११ अगस्त: केन्या के किसुमु शहर में पिछले साल सत्संग हुआ था, इस साल भी फिर से फॉलोअप सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम इस शहर में रखा गया।

१३ अगस्त: सवा दो महीने के विदेश सत्संग प्रवास के बाद पूज्यश्री का पुनः सीमंधर सिटी में आगमन हुआ।

१७-१८ अगस्त: अडालज त्रिमंदिर में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में २५०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री दीपकभाई के द्वारा किए गए चरणविधि के अर्थ की हिन्दी डबिंग की डी.वी.डी का विमोचन हुआ।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तर भारत सत्संग प्रवास

- मेरठ** दिनांक : 22 सितम्बर, समय : शाम 5 से 7 संपर्क : 9410607553
स्थल : पीपीपी कोन्फ्रेंस हॉल, दास मोटर्स के पास, आबू लेन.
- हरिद्वार** दिनांक : 23 सितम्बर, शाम 4 से 6-30 संपर्क : 9719415074
स्थल : सियाराम जानकी वल्लभ सेवा सदन, दुधारी चौक, साईं बाबावाली गली, भूपतवाला.
- जालंधर** दिनांक : 24 सितम्बर, समय : शाम 4-30 से 7 संपर्क : 9814063043
स्थल : अर्जुन हॉल, देवी तालाब मंदिर, जालंधर सिटी.
- लुधियाना** दिनांक : 25 सितम्बर, समय : शाम 6 से 8-30 संपर्क : 9888821088
स्थल : राम झरोखा कोठी नं. 1082, सेक्टर-39, अर्बन एस्टेट, सेक्रेड हार्ट कोन्वेन्ट स्कूल के पास, चंडीगढ़ रोड.
- चंडीगढ़** दिनांक : 26 सितम्बर, समय : शाम 6-30 से 9 संपर्क : 9872188973
स्थल : सनातन धर्म मंदिर हॉल, सेक्टर 32D.
- कुरुक्षेत्र** दिनांक : 27 सितम्बर, समय : शाम 4 से 6 संपर्क : 9671868450
स्थल : कम्युनिटी सेन्टर, मेन मार्केट, सेक्टर-5, हुडा कुरुक्षेत्र.
- सोनीपत** दिनांक : 28 सितम्बर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : 9818229870
- दिल्ली** दिनांक : 29 सितम्बर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : 9810098564

दक्षिण भारत सत्संग प्रवास

- दावनगरे** दिनांक : 21 सितम्बर, समय : शाम 7-30 से 9-30 संपर्क : 9901235358
स्थल : रंग महल, अक्का महादेवी रोड, पी.जे. एक्सटेंशन, दावनगरे.
- चित्रदुर्ग** दिनांक : 22 सितम्बर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : 9448923892
- हावेरी** दिनांक : 22 सितम्बर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : 9343401229
- गदग** दिनांक : 23 सितम्बर, समय : शाम 7-30 से 9-30 संपर्क : 9880168216
स्थल : वासुपूज्य जैन देरासर, महावीर कॉलोनी, गदग.
- होसपेट** दिनांक : 24 सितम्बर, समय : दोपहर 3-30 से 6 संपर्क : 9448359788
स्थल : सहकारी कल्याण मंडपम, नेहरू कॉलोनी, होसपेट.
- धारवाड** दिनांक : 25 सितम्बर, समय : सुबह 9 से 11 संपर्क : 9449187919
स्थल : श्री शीतलनाथ जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ, लाईन बाजार, धारवाड.
- धारवाड** दिनांक : 25 सितम्बर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : 9343401229

आफ्रिका - दुबई सत्संग प्रवास

- केन्या** दिनांक : 17 से 24 अक्टूबर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : +254 733 612040
- युगांडा** दिनांक : 25 से 26 अक्टूबर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : +254 712 757575
- दुबई** दिनांक : 28 से 29 अक्टूबर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : +971 557 316937

दादावाणी

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा २०१३ में प्रकाशित हुई हिन्दी पुस्तकें एवं सीडी

पुस्तकें	डीवीडी/ओडियो सीडी
1) आप्तवाणी - ६	1) पूणे सत्संग २०१२ भाग-१ 4) चरणविधि (प्रार्थनाओं की ओडियो सीडी
2) आप्तवाणी - ८	2) हैदराबाद २०१२ सत्संग भाग-१ - पूज्य दीपकभाई के स्वर में)
3) समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (उत्तरार्ध)	3) जालंधर २०११ सत्संग भाग १-२ 5) चरणविधि का अर्थ (हिन्दी डबींग)

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
 - ✦ 'साधना' पर सोम से शनि - रात ९-३० से १० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
 - ✦ 'डीडी-गिरनार' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० ज्ञानवाणी (गुजराती में)
 - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
- UK**
- ✦ 'विनस' (डीश टीवी चैनल 805-युके) पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'साधना' पर हर रोज - शाम ७-१५ से ७-४५ (हिन्दी में) - समय में परिवर्तन
 - ✦ 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
 - ✦ 'दूरदर्शन' पर गुजरात में हर रोज दोपहर ३-३० से ४, 'जरा जुओ जागीने' (गुजराती में)
 - ✦ 'डीडी-गिरनार' पर हर रोज रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
 - ✦ 'डीडी-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (मराठी में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST (गुजराती में)
- USA-UK**
- ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

'दादावाणी' के सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को दादावाणी विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे प्राप्त पत्रिका पर अपना नाम, पता, पिनकोड (झीपकोड) आदि जाँच कर लें, जो दादावाणी पत्रिका के कवर के उपर लिखा हुआ रहता है। यदि उसमें कोई भूल हो तो हमें पत्र से (अडालज त्रिमंदिर के पते पर) या ई-मेल से (dadavani@dadabhagwan.org पर) सूचित करें।

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, बडोदरा : (दादा मंदिर) (0265) 2414142, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बेंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44(0)330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1-877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

हुबली

दि. २८ सितम्बर (शनि), शाम ६-३० से ९ - सत्संग तथा २९ सितम्बर (रवि), शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि
स्थल : श्री सुजयेन्द्र सभा भवन, राघवेन्द्र मठ, भवानीनगर, हुबली (कर्णाटक). संपर्क : 7795394434
दि. ३० सितम्बर (सोम), शाम ६-३० से ९ - आप्तपुत्र सत्संग - स्थल : गुजरात भवन, देशपांडेनगर, हुबली.

बेंगलोर

दि. २९ सितम्बर (रवि), शाम ४-३० से ६-३०-आप्तपुत्र सत्संग तथा ३० सितम्बर (सोम), शाम ६ से ९-ज्ञानविधि
स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी. रोड. संपर्क : 9590979099
दि. २ अक्टू. (बुध), शाम ६ से ८-आप्तपुत्र सत्संग-स्थल:महाराष्ट्र मंडल, 2nd क्रोस, रामचंद्र रोड, गांधीनगर.

दिल्ली

दि. १९ और २१ अक्टू. (शनि-सोम), शाम ६ से ८-३०-सत्संग तथा २० अक्टू. (रवि), शाम ४-३० से ८-ज्ञानविधि
स्थल : लौरैल हाई-स्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा. संपर्क : 9811488263

जबलपुर

दि. २३ अक्टूबर (बुध), शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा २४ अक्टूबर (गुरु), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि
स्थल : मानस भवन, राइट टाउन स्टेडियम के पास, सत्य अशोका होटल के सामने. संपर्क : 9407022263

कानपुर

दि. २६ अक्टूबर (शनि), शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा २७ अक्टूबर (रवि), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि
स्थल : बाल भवन, 16/99A, फुल बाग, कानपुर (उत्तर प्रदेश). संपर्क : 9794239167

अडालज त्रिमंदिर

दि. ३ नवम्बर (रवि), रात ८ से १० - दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति
दि. ४ नवम्बर (सोम), सुबह ८-३० से १ - नूतन वर्ष (वि.सं.२०७०) के अवसर पर दर्शन-पूजन-भक्ति

भरूच में परम पूज्य दादा भगवान का १०६वाँ जन्मजयंती महोत्सव

दि. १३ नवम्बर (बुध), शाम ५ बजे - महोत्सव शुभारंभ, शाम ७-३० से १० - सत्संग
दि. १४ नवम्बर (गुरु), सुबह ९-३० से १२, शाम ७-३० से १० - सत्संग
दि. १५ नवम्बर (शुक्र), सुबह ९-३० से १२, शाम ७-३० से १० - सत्संग
दि. १६ नवम्बर (शनि), सुबह ८ से १, शाम ४-३० से ६-३० -जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति
दि. १७ नवम्बर (रवि), सुबह ९-३० से १२ - सत्संग तथा शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

स्थल : पांजरापोल ग्राउन्ड, श्रवण चोकडी के पास, दहेज बायपास रोड, भरूच. संपर्क : 9924348882

- १) यदि आप इस महोत्सव में भाग लेना चाहते हैं, तो कृपया अपना रजिस्ट्रेशन दि. २१ अक्टूबर २०१३ तक अपने नज्दिकी सत्संग सेन्टर पर अवश्य करवाएँ। जिनके नज्दिक में सेन्टर नहीं है, वे फोन 079-39830400 पर रजिस्ट्रेशन करवाएँ।
- २) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।
- ३) गद्दे की व्यवस्था नहीं है। ओढ़ने-बीछाने का चदर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ।
- ४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

सितम्बर २०१३
वर्ष-८, अंक-११
अखंड क्रमांक - १५

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD, P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.



फाइल नं.

2

(पति)

सँभाल ले, असल में उसकी कीमत है

में तो हीरा वा को भी खुश कर देता था, ऐसा बोलकर। बल्कि हीरा वा ऊपर से मुझ से कहतीं कि 'हं, आप तो बहुत अच्छे इन्सान हैं, ऐसा क्यों बोल रहे हैं?' ऐसा बोलकर हमें सँभाल लेना चाहिए। अपनी नीयत गलत नहीं है। सँभाल लेने में यदि कभी हमें संसारी चीज़ लेनी हो तो वह गलत है। हमें तो उनका मन साफ करने के लिए सँभाल लेना है। जब तक सामनेवाले के मन का समाधान नहीं हो जाता, तब तक आपको परेशानी रहेगी। अतः समाधान लाना चाहिए।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.